IIME

A premier Research Institute publishes a wide range of rare, collectible, and award-winning research-based books on thrust areas of national importance. Many of them are bestsellers and have received widespread recognition and appreciation from the academic community and also been extensively reviewed in national dailies and magazines. For more information please visit our website : iimejaipur.org.

IIME, the publisher, is a Research Institute notified in the Gazette of India and Rajpatra of Rajasthan. It is engaged in research in social sciences and is recognised as a Scientific and Industrial Research organisation by the Ministry of Science and Technology, Government of India. Given its credibility, it has been commissioned by the government and private organisations to conduct research on their behalf in a number of thrust areas. The proceeds from these researched publications are spent on further research and social welfare projects.

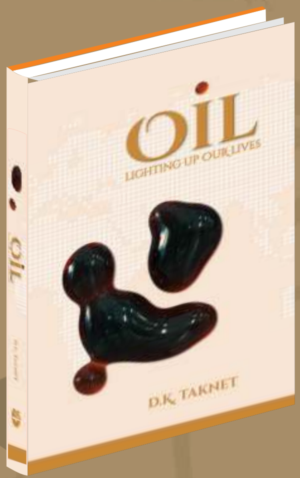
OIL
LIGHTING UP OUR LIVES
D.K. TAKNET

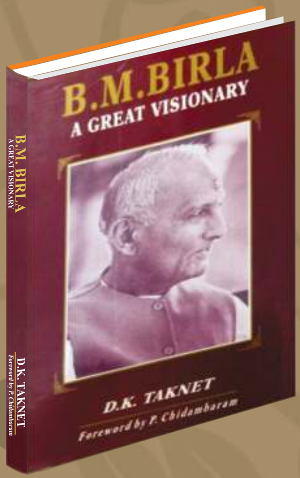
B.M.BIRLA
A GREAT VISIONARY
D.K. TAKNET
Foreword by P. Chidambaram

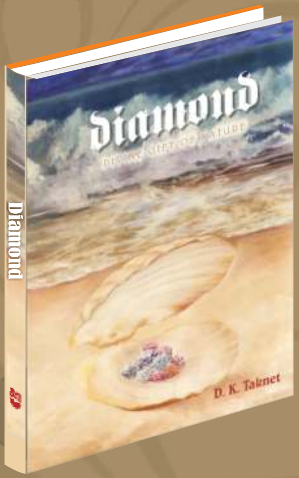
Diamond
Diamond
D. K. Taknet

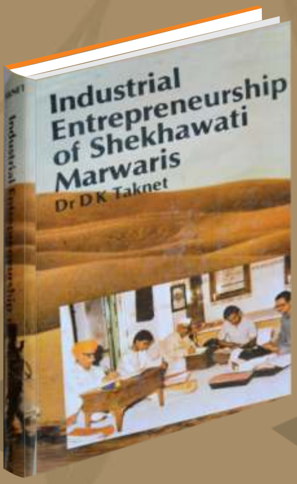
Industrial Entrepreneurship of Shekhawati Marwaris
Dr D K Taknet

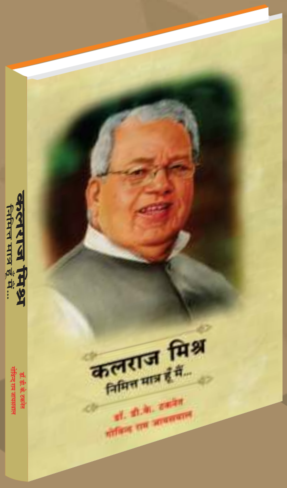
कलराज मिश्र
निमित्त मात्र हूं मैं...

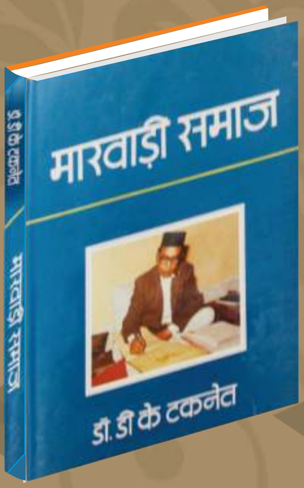
मारवाड़ी समाज
डॉ. डी के टकनेत

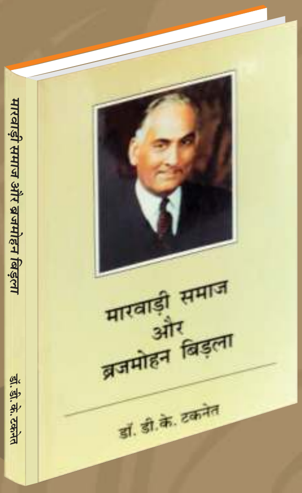
मारवाड़ी समाज और ब्रजमोहन बिड़ला
मारवाड़ी समाज
और
ब्रजमोहन बिड़ला
डॉ. डी.के. टकनेत

आशियानों का सफ़रनामा
आशियानों
का
सफ़रनामा
डॉ. डी.के. टकनेत

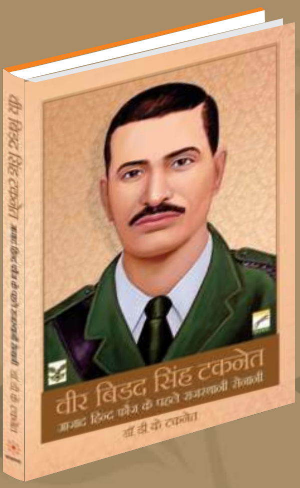
वीर बिडद सिंह टकनेत
डॉ. डी.के टकनेत

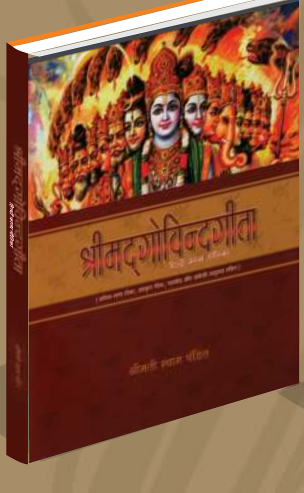
श्रीमद्गोविन्दगीता

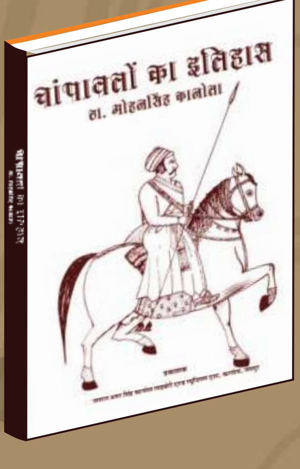
चांपावतों का इतिहास

मारवाड़ी विरासत

आईएसबीएन : 978–81–935143–2–0
प्रथम संस्करण : 2024
पृष्ठ संख्या : 310, रंगीन चित्र पृष्ठ : 218, श्वेत–श्याम चित्र पृष्ठ : 90

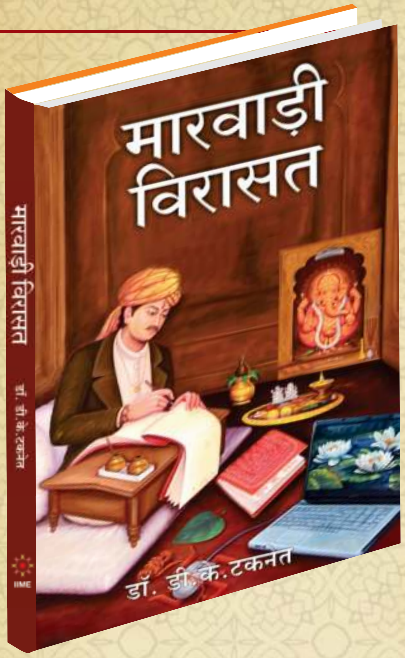

वैश्य भारत का पुरातन व्यापारिक वर्ग है। वैदिक युग से ही अपनी मेहनत और कर्मठता का परिचय देने वाले इस वर्ग से ही आगे चलकर मारवाड़ी समुदाय की उत्पत्ति हुई, जिसने अटूट लगन व अनूठे व्यापारिक कौशल से न सिर्फ अपार धन सम्पदा अर्जित की, बल्कि मुक्तहस्त से उदारतापूर्वक इसका उपयोग जनकल्याण के कार्यों में भी किया। मारवाड़ियों ने भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के आगमन से पूर्व राजा–महाराजाओं के मन्त्री, सलाहकार और दीवान जैसे उच्च पदों पर सफलतापूर्वक कार्य करते हुए राजकाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। फलतः ये लोग राजपूताना, हरियाणा, मालवा और आस–पास के क्षेत्रों के साथ–साथ अन्य अनजाने सुदूर क्षेत्रों की कठिन चुनौतियों का सामना करते हुए देश–विदेश में फैल गए। मारवाड़ियों के आत्मविश्वास, अन्य समुदायों के साथ सामंजस्य बिठाने की उनकी स्वभावजन्य क्षमता, सौहार्दपूर्ण व्यवहार एवं कठिन परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य को साधने की एकाग्रता ने उन्हें पहले व्यापार–व्यवसाय, लोकोपकार व अन्ततः उद्योग जगत का बेताज बादशाह बना दिया। भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक तन्त्र में मारवाड़ी समुदाय की जड़ें बहुत गहरी हैं। व्यापारिक समझ और चातुर्य से धन कमाने तथा देश व समाज को उसका समुचित वापस लौटाने के अपने जन्मजात स्वभाव के कारण वे निरन्तर जनकल्याण के कार्यक्रमों में खुलकर आर्थिक योगदान देते रहे हैं। उनका परमार्थभाव, राष्ट्रप्रेम, आजादी के लिए जेल जाने से लेकर फांसी के फन्दे तक का सफर वर्तमान पीढ़ी के लिए बेहद प्रेरणादायी व ऐतिहासिक है। कुछ प्राचीन अप्रासंगिक परिपाटियों को त्यागकर और समयानुकूल प्रथाओं–परम्पराओं को अपनाकर यह समुदाय आधुनिक युग के साथ कदमताल करते हुए नवीन और प्राचीन मूल्यों का अद्भुत सांस्कृतिक संगम बनाए हुए है।

देश के सबसे सफल औद्योगिक घराने मारवाड़ी हैं, जिन्होंने स्वयं की उन्नति के साथ–साथ स्थानीय लोगों को नौकरी पर रखकर व साझेदारी में काम करवाकर निपुण बनाया, जो कालान्तर में व्यापार व उद्योग–धन्धे लगाकर समृद्धशाली बने। परिणामस्वरूप वे नए जोश, नए उत्साह व उमंग के साथ व्यापार में आगे बढ़े। अपने कुशल नेतृत्व, अभिनव प्रयोगों, शोध एवं तकनीक के विकास में गहरी दिलचस्पी के कारण आज मारवाड़ी अनेक देशों की सरकारों को आर्थिक विकास के गुर सिखा रहे हैं। इनके कार्यकलाप हमेशा 'बहुजन हिताय सर्वजन सुखाय' की भावना से प्रेरित रहे हैं। इसी कारण इन्हें उच्च शिखर पर पहुंचने में मदद मिली तथा यही कारण है कि इसका प्रभाव वृहद् और दूरगामी रहा है।

प्रस्तुत कॉफी टेबिल बुक 'मारवाड़ी विरासत' में समुदाय की गौरवगाथा का बेहद दिलचस्प, जीवन्त एवं अनुकरणीय चित्रण प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक में देश के इतिहास और इसकी सामाजिक–आर्थिक आधारशिलाओं पर अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले, बहुत–से पुरुषार्थी मारवाड़ियों में से प्रमुख हस्तियों के अविस्मरणीय योगदान के बारे में भी आप विस्तार से पढ़ेंगे। मारवाड़ियों की नई पीढ़ी, आज भी उच्च लक्ष्य तय करते हुए अपने पूर्वजों द्वारा रखी गई नींव पर नए और भव्य निर्माण करने में जुटी है। समय के साथ–साथ और ज्यादा तरक्की करते हुए वह नए क्षितिजों की तरफ बढ़ रही है। नई पीढ़ी की कुशल देखरेख और मार्गदर्शन में कितनी ही जनकल्याणकारी योजनाएं लागू कर यह समुदाय देश व समाज की सेवा और विकास में जुटा हुआ है। मारवाड़ी समुदाय से जुड़ी बहुत–सी नई और अब तक अनछुई दिलचस्प, रोचक और आश्चर्यजनक जानकारियों से हम आपको परिचित करवाएंगे। अध्यात्म से लेकर प्रशासन, राजनीति, स्वतंत्रता–संग्राम, राष्ट्र–निर्माण, विज्ञान–तकनीकी से लेकर कला–संस्कृति तक इस समुदाय ने असाधारण एवं अद्वितीय विरासत राष्ट्र को सौंपी है।

पुस्तक देश–विदेश में फैले मारवाड़ी समुदाय के सम्बन्ध में तथ्यों व जानकारियों के संग्रहण व उनकी जांच–परख में पांच वर्ष के निरन्तर और व्यापक शोध तथा अथक परिश्रम का ही परिणाम है, जो काव्य, कथा, ख्यात, वंशावली, बहीखाते, शिलालेख, दानपत्र, पट्टे–परवाने व अन्य दस्तावेजों के साथ–साथ मेरी पूर्व प्रकाशित पुस्तकों व शोध लेखों हेतु किए गए अनुसंधान से प्राप्त ज्ञान व अनुभव पर आधारित है। यह लगभग सात सौ ऐसे दुर्लभ श्वेत–श्याम व रंगीन छायाचित्रों, रेखाचित्रों और दस्तावेजों से सुशोभित है जो रोचक तरीके से पहली बार यहां प्रकाशित हो रहे हैं। इस पुस्तक में मिट्टी की खुशबू, अथक परिश्रम, त्याग, स्वदेश–प्रेम, आजादी की लगन, औद्योगिक साहसिकता और परोपकार की महक रची–बसी है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि पाठकों के लिए ऐसी अविस्मरणीय जानकारी किसी भव्य उपहार से कम नहीं है। यह उन सब समुदायों के लिए भी एक प्रेरणास्रोत साबित होगी, जो जिन्दगी में कुछ कर गुजरने का जज्बा एवं उच्च सोच के साथ आसमानी बुलंदियों को छूने में विश्वास रखते हैं।

JAIPUR
THE GEM OF INDIA

ISBN : 81-85878-01-3
First edition : 2013, second edition : 2016, third edition : 2019, fourth edition : 2024
Book size : 13”x9.50”, finished : 13”x19” open
Pages : 440 pages + end pages + plc, colour : 4+4
Rare visuals : 693 like paintings, b&w photos, line sketches, maps, documents etc.
Fabrication : plc 130 gsm art & jacket 170 gsm art
Binding : section sewing ends pasted down, cased, h/t
Paper : plc : arlin, jacket & text : 170 gsm imported art paper
End pages : 120 gsm wood-free printed 1c x 1c
One uv & with spot lamination and gold foil on front cover,
Jacketed and individually shrink-wrapped hard

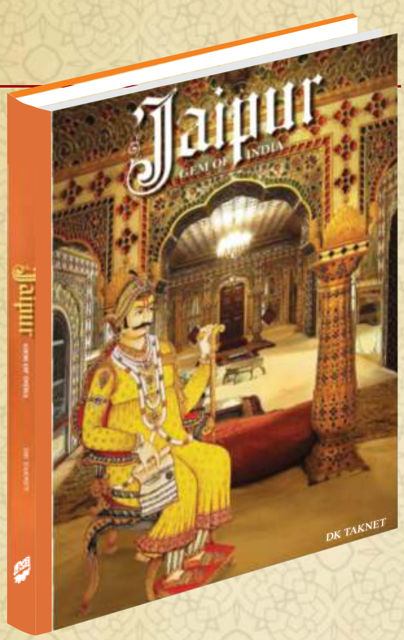

Jaipur, the glorious Pink City of India, evokes grandeur, valour, romance, and beauty. Travellers, poets, and philosophers have lavished praise on it, and few other cities in India are imbued with such richness and romance. Among its numerous architectural wonders, the city's Jantar Mantar (observatory) and Amber Fort have been included in the United Nations Educational Scientific and Cultural Organisation's (UNESCO) list of world heritage sites. The book discusses in some detail the lesser known aspects that have contributed to its coveted status as a heritage city. It also offers glimpses into the lives of people and the contributions they have made to this city.

The book focuses on the colourful history of Dausa, Amber and Jaipur encompassing a period of 1000 years incorporating the most unusual details. Prominent photographers, museums, libraries, and art galleries in India and abroad have contributed approximately ten thousand visuals. Out of those, 693 have been selected for this book by a team of eminent Indian designers. During the course of research, the research team travelled approximately 1,50,000 kilometres and spent some 1,460 days researching and interviewing more than 5,000 people directly or indirectly associated with Jaipur, ranging from chairmen emeritus to vegetable-sellers. People from diverse backgrounds, narrated fascinating stories, inspirational anecdotes, opinions, and vignettes, providing dramatic insights into this great city. In order to compile this book approximately 1,75,000 pages of archival material were sifted through with other data including old reports, journals, official records of Rajasthan's royal families, and the like.

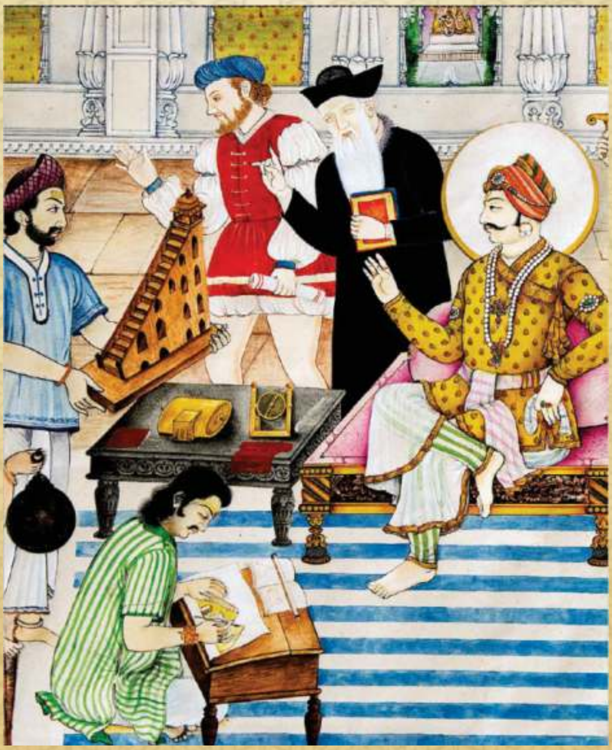

This eye-catching, arresting large format, exquisitely illustrated book comprises 440 pages with 693 rare visuals, i.e. paintings, lithographs, line-sketches, old maps, artifacts, etc.,related to the city of Jaipur. Conceived and written by Dr. D.K. Taknet, a reputed business historian and assisted by a team of research scholars, the book seamlessly blends Jaipur's past with present and future. This meticulously researched and documented book presents a holistic picture of the city, bringing to light many hitherto unexplored facts that will interest those with a curiosity about the past. The book is richly illustrated which will capture the imagination of the discerning reader.

OPINIONS, VIEWS AND REVIEWS

The author has made an attempt to provide a holistic perspective of Jaipur...The book makes an interesting read about Jaipur as it discusses the development works of the state government and highlights different fields where the city and its people have created a name for themselves...I congratulate the author for presenting a panoramic view of Jaipur covering almost all the dimensions which are of great interest to the readers as well as to those who do not know much about this beautiful city which now heads towards marking a global footprint in several fields.

Ashok Gehlot, Chief Minister, Rajasthan

While exploring the past, this book also slides into the present. The author has in immense detail provided an account of Jaipur's current social, economic and political scenario...In this book by Dr. D.K. Taknet, Jaipur truly takes on an ethereal quality as a wonderful spread of visual and factual information spills out of every page. All this archived in a language and style that is accessible to all. The chapters in this book have been divided into the past, present and future, thereby scripting the journey from a heritage city steeped in royal traditions to the hi-tech city with a modern and flourishing economy. Though the task of recording and linking these elements in time has been difficult, given the wealth of information, the author has attempted to communicate them with utmost lucidity and comprehensiveness.

Princess Diya Kumari, The City Palace, Jaipur

Dr. D.K. Taknet, a renowned scholar and author, has undertaken this noble venture of bringing out a complete, encyclopaedic and all-encompassing study of the rich heritage of Jaipur. Replete with interesting anecdotes and legends, evocative images and photographs, and research material from myriad sources, the 300-year spectacular journey of this inimitable land is captured within the pages of this captivating and dazzling extravaganza.

Devarshi Kalanath Shastry, Sanskrit Scholar, Jaipur

Rajasthan
A LAND OF BEAUTY AND BRAVERY

ISBN : 978-93-527908-2-1
First edition : 2024
Book size : 13"x9.50", finished : 13"x19" open
Pages : 279 + 8 end pages + plc + jacket, colour : 4+4
Rare visuals : 700 like paintings, b&w photos, line sketches, maps, documents etc.
Paper : plc & jacket : 170 gsm matt art paper, text : 100 gsm renaissance
End pages : 190 gsm renaissance
Fabrication plc : matt lamination & raised uv
Jacket : matt lamination & raised uv
Binding : section sewn & perfect bind with case

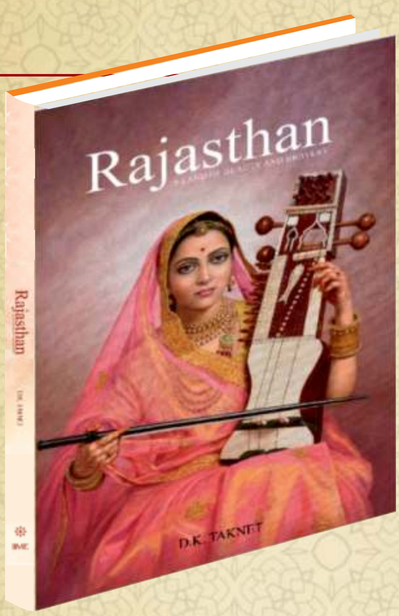

Rajasthan as one of the oldest civilisations, is an exotic symbol of Indian culture. It is known for its chivalry, valour, sacrifice, romance, loyalty, strength of endurance and perseverance. The largest state in India, its name evokes golden sand dunes of the Thar desert; architectural splendour of forts, palaces and temples; the ancient Aravalli range; India's largest saline lake, Sambhar; diverse flora and fauna; unique cuisine; brave, sturdy, cheerful and daredevil inhabitants. Hindus, Muslims, Christians, Sikhs, Jains, Buddhists and Parsis coexist peacefully, in total harmony with community fervour.

Widespread fascination of colours and patterns finds vivid expression on the walls of village houses. The festival celebration is full of life, manifests in age-old traditions, rituals, sports, pageantry and the ambience entails a fairy tale-like tenor. Joie de vivre is expressed through dance and music, the spirit of jubilation enlivens the desert. Rajasthanis excel in major spheres of life and achieve tremendous success as entrepreneurs and innovators, possess the qualities of perseverance, enthusiasm, grit, passion, sense of mission, resilience and strength of body and mind. Socio-cultural, religious ethos, and the natural geographical terrain serve to augment their zest for life.

The book elaborates on the less known aspects from its past and present that blends the finest from its rich heritage. The state is famous for exquisite miniature paintings, frescoes, fabrics, artefacts and fine jewellery that showcase uniqueness in creativity. This exotic land is a treasure trove of handicrafts, folk music, instruments and musicians. Numerous sculptured and magnificent temples, date back many centuries, dot the entire state, hence a popular pilgrim spot for people of different faiths.

The Rajasthani story epitomises triumph over the harsh desert land. The Colours of Rajasthan unveils the mystique, and the uniqueness of Rajasthan that captivates travellers from all parts of the world. This pictorial book comprising 495 pages is richly illustrated with over 705 rare, colour photographs, paintings, litho-graphs, fillups, maps, documents, black and white photographs, illustrations, and line sketches, first time ever published to capture the imagination of a discerning reader.

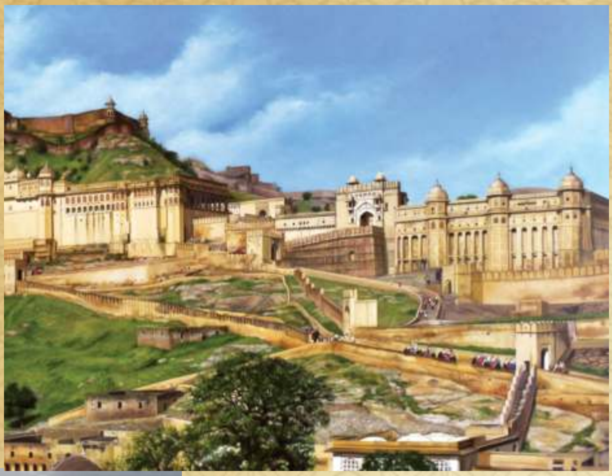

PUNE

A CITY OF MANY SHADES AND COLOURS

ISBN : 978-81-952365-0-3
First edition : 2021
Book size : 12"x12", finished : 12"x24" open
Pages : 348 + end pages + plc, colour : 4+4
Rare visuals : 864 like paintings, b&w photos, line sketches, maps, documents etc.
Paper : plc & jacket : 170 gsm matt art paper
Text : 100 gsm renaissance,end pages : 190 gsm renaissance
Fabrication plc : matt lamination & raised uv
Jacket : matt lamination & raised uv

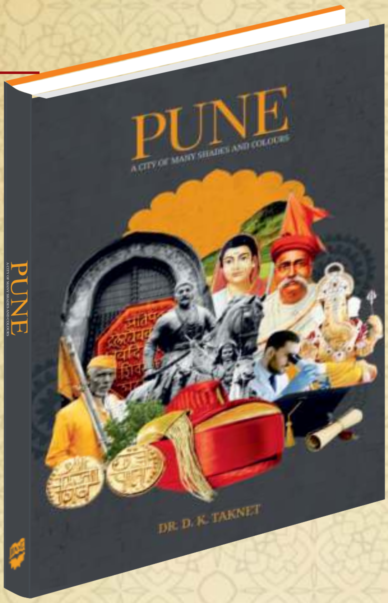

As a nation, we have reason to be justifiably proud of how Pune has developed as a city over the centuries. It sets many hearts aflutter with a vision of grandeur, and valour. The city's inherent historic charm has always been a major source of attraction. A small nondescript agricultural settlement in the eighth century, it grew to become the political epicentre of the Maratha Empire. Pune has enjoyed a distinguished place on the timeline of India from prehistoric times, with its struggle against Muslim domination and the creation of the Maratha Empire under the visionary leadership of Chhatrapati Shivaji and subsequently the Peshwas. It has witnessed seismic cultural, administrative and economic transformation brought about by the arrival of the British. Later, as Pune modernised, new administrative, civic, and water supply systems were established. Post-independence, there has been rapid industrial growth and expansion of the city while retaining much of its traditional charm and culture. The city has played a seminal role in the freedom movement and, above all, in Pune's contemporary growth trajectory as a centre of arts, crafts, music, education, commerce, trade, and industry. Modern Pune is a cosmopolitan city awash with many opportunities. It is known as the knowledge city, an IT hub, a motor city, and is a fine blend of antiquity and modernity with a rich cultural heritage.

Although a relatively small city compared to India's major metropolises, Pune is writ disproportionately large in the Indian psyche and imagination. Each road and alleyway revives memories of eminent social reformers, political leaders, scientists, dramatists, artists, culturists, educationists, businessmen and sports personalities whose ideas, actions or leadership have inspired the country as a whole.This lavishly illustrated book has 348 pages, redolent with 864 rare visuals selected from archives around the world. It provides a fascinating and colourful panoramic view of the city through the ages. This art book focuses on the colourful history of Pune, and its less-known events, facts and gifted people with their variegated activities, and is remarkable and endlessly engrossing. The author presents a comprehensive picture of the city, bringing to light many hitherto unexplored facts that will interest those with a penchant for urban histories. For anyone interested in a carefully researched, beautifully designed and abundantly illustrated artistic account of Pune city, this art book is an ideal companion.

OPINIONS, VIEWS AND REVIEWS

The pages of this art book present a wonderfully illustrated panorama of Pune through the ages. My warm congratulations to Dr. D. K. Taknet and his team of research associates for providing such a treat to the eyes and food for the soul.

Uddhav Balasaheb Thackeray, Chief Minister of Maharashtra

The great vision and ceaseless efforts of Dr. D. K.Taknet and his research associates, are praiseworthy. Their sincere and dedicated endeavours backed by thorough and extensive research has made this great city shine in its glory with brilliance. They have done justice to the city's eminence by highlighting its most significant facets through lucid content and rare visuals.

Sharad Pawar, Member of Parliament (Rajya Sabha)

One can gather deeper insights into the charming mix of cultural heritage and contemporary modernisation of the city in this book. The author has impeccably immortalised the glory and beauty of Pune by both, documenting authentically and depicting lucidly the rich history, glorious knowledge traditions and path-breaking social reforms of the city."

Dr. Vinay Sahasrabuddhe, President, Indian Council for Cultural Relations and MP

This coffee table book is well produced and carefully documented with rare visuals, which provides valuable information on every aspect of life.

Murlidhar Mohol, Mayor, Pune

I, on behalf of Pune city, thank you for producing such a wonderful book...This superb book makes Pune come alive and is a fantastic store of information, much of which, I was completely unaware.

Bibek Debroy, Chairman, Economic Advisory Council to the Prime Minister

The book is most remarkable, since it captures the memorable heritage of Pune, while also creating a marvellous pictorial narrative of the modern urbanisation and growth. So it gives a perspective of the beautiful confluence of antiquity and modernity...There is a comprehensive collection of these makers of Pune, which is so valuable...The book is not just a must read or must see publication, but should be possessed as an invaluable gift.

Dr. Raghunath Mashelkar, FRS, National Research Professor

This book not only captures the magic and beauty of the city through its many images over time and history, it also provides a deep and sensitive insight into its history, culture and changing characteristics. Dr. Taknet captures it all. Eloquently.

Pritish Nandy, Journalist, Parliamentarian, Media and Television Personality

An art piece which provides a deep insight into the evolution of this city through the ages. The book through the rich text and sketches offers the reader a wonderful learning experience of vivid facts of this city. I congratulate and applaud the concerted efforts of Dr. D.K. Taknet and his research team, and IIME, Jaipur...doing justice to the city's illustrious glory and richness. This book is a perfect blend of text and rare visuals.

Dr. N.R. Karmalkar, Vice-Chancellor, SP Pune University

The present work approaches Pune from all possible perspectives—historical, cultural, social, political, religious and economic; that too academically and artistically. It does not miss any period whether ancient, medieval or modern. It has, so to say, unlocked the treasures called Pune. The choice of paintings and photographs along with sufficient explanatory content deserves to be complimented.

Sadanand More, Chairman, Maharashtra State Board of Literature and Culture

I compliment Dr. D.K. Taknet for this outstanding book chronicling the rich heritage and history of Pune. The book also captures the transformation of the city of Pune from being the cultural capital of India to a modern metropolis with a vibrant industrial and technology ecosystem.

Baba Kalyani, Chairman and MD, Bharat Forge Ltd.

Dr. Taknet has done a superb job capturing a myriad of colours and shades of our Pune city...He has brought out the fact that Pune is a wonderful contrast carefully balancing the old and new, ancient and modern, traditional past along with the evolving future. The book is replete with images, through historical, architectural, political and geographical documentation. Dr. Taknet takes us on an illustrative journey which undoubtedly is a testament to his extensive research. To an outsider, the book is a mine of information about the city and its proud heritage.

Deepak Chhabria, Executive Chairman, Finolex Cables Limited

THE MARWARI HERITAGE

ISBN : 978-81-929767-1-6
First edition : 2015, second edition : 2016, third edition : 2019, fourth edition : 2023
Book size : 13"x9.50", finished : 13"x19" open
Pages : 390 + end pages + plc + jacket, colour : 4+4
Rare visuals : 616 like paintings, b&w photos,
line sketches, maps, documents etc.
Paper : plc : arlin, jacket & text : 100 gsm imported art paper
End pages : 160 gsm renaissance
Fabrication plc : arlin 130 gsm art & jacket 160 gsm
Mont blanc : fsc mixed with spot uv - raised
Binding : section sewn & perfect bind with case

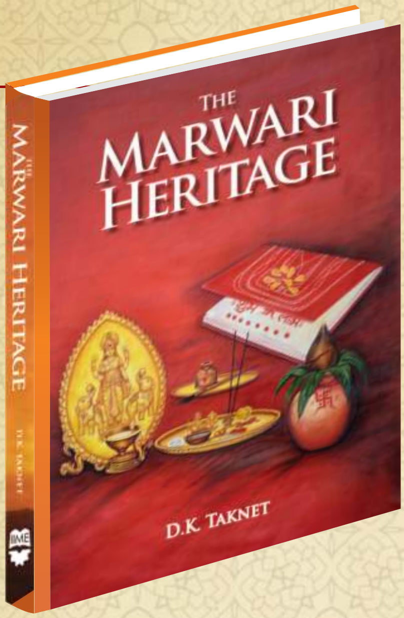

From the early Vedic period, the Vaishyas, India's oldest mercantile community, generated wealth for the nation through their remarkable vision, abilities, and tenacity. Their Marwari offshoots were appointed by many rulers as ministers, advisers, and diwans, and are widely recognised as India's earliest philanthropists. The Marwari Heritage takes the reader on a voyage of discovery of the Marwaris who migrated from Rajputana, Haryana, Malwa, and adjacent regions to other parts of the country. They braved trials and tribulations in uncharted regions, supporting others of their community, never losing faith in their ability to succeed, and focused steadfastly on their goal. They became the uncrowned kings, first of trade and business, and later of the industry. They wholeheartedly involved themselves in the freedom struggle and played a conspicuously active role, many courting imprisonment and even martyrdom.

Today, the roots of the Marwari community are deeply enmeshed in the social, cultural, and economic fabric of India. Their innate psyche of giving back to society has seen them donate generously towards education, empowerment of women, and vocational training. Shedding some traditions and retaining many, they have stepped into the modern age, achieving an enviable cultural mix. At the helm of most successful enterprises, their focus on innovation and technological advancement has resulted in the governments of several countries tapping their expertise. This book is enriched with cameos of the many who have left an indelible mark on the history and the socio-political and economic foundations of India. The younger generation of Marwaris continues to dream big and build on the foundations laid by their forefathers, and envisaging new horizons while at the same time never forgetting the welfare of the less privileged and continuing to establish a plethora of welfare trusts for their benefit. This volume is meticulously researched over a period of five years, with the research teams travelling over 3,50,000 kilometres and spending more than 2,000 days researching and interviewing almost 8,000 people directly or indirectly associated with this enterprising community, ranging from chairmen emeritus to the common man.

People from diverse backgrounds narrated fascinating stories, replete with previously unknown facts, inspiring anecdotes, opinions, and vignettes, providing dramatic insights into uncharted facets of this entrepreneurial community. The research team poured over approximately 2,75,000 pages of information, apart from other data, including personal records, memoirs, diaries, and ledgers, British gazetteers, census reports, biographies, daily newspapers, journals, and reports of periodical conventions and conferences.The Marwari Heritage, comprising 390 pages, is richly illustrated with over 616 rare visuals published for the first time, providing readers with a visual banquet.

OPINIONS, VIEWS AND REVIEWS

I commend IIME, Jaipur on its excellent initiative in bringing the age-old saga of this enterprising community to the people through a coffee table book.

Hamid Ansari, Vice-President of India

In preparing the volume, Dr. D.K. Taknet has done thorough and extensive research for which he deserves congratulations as well as the gratitude of the reader. The rare images, be they of the past or present, offer visual pleasure while the accompanying descriptions make for absorbing reading. The volume is as much a symbol of transformation underway in India as the innovative enterprises that Marwari entrepreneurs are pioneering every day.

Dr. Arvind Panagariya, Vice Chairman, NITI Aayog, New Delhi

I congratulate Dr. D. K. Taknet on his commendable work that without any academic obfuscation offers a comprehensive account of the Marwari historic contributions.

Nirmala Sitharaman, Former Minister of State (IC), Commerce & Industry, Government of India

In *The Marwari Heritage*, Dr D. K. Taknet has given a comprehensive account of the history and current achievements of this community. He has brought to light the little known facts about their contribution...His painstaking labour to reveal the history of the community over several centuries and keen insights into their ethos are quite evident in this work. To my knowledge there is hardly any comparable work about any other community in India. This book is a source of knowledge for anyone interested in the contribution of the Marwaris in diverse fields of our national life.

Prof. V. S. Vyas, Member, Economic Advisory Council to the Prime Minister

The Marwari community is reputed and known for its business and community service...Dr. Taknet has made an invaluable contribution to the history of the Marwari community through his extensively researched work. I compliment him on this great task.

Prof. Y. Sudershan Rao, Chairperson, ICHR, Government of India

Dr. D. K. Taknet's many endeavours have resulted in unearthing an impressive wealth of information about the Marwaris, much of which would have been lost in the folds of history if it wasn't for his penchant for extensive research and love of the community. *The Marwari Heritage* is aimed at bringing to light the community's unsurpassable contributions towards the socio-economic development of the country. It is intended to be a visual treat with rare photographs and insights based on comprehensive research.

Maneck Davar, Editor, *Marwar India*, Mumbai

Dr. Taknet has written a well-researched history of the Marwari community in simple prose. It is easy to read and understand and fills many gaps in earlier studies on this subject with a refreshing new dimension on the community. A comprehensive, well-documented and beautifully illustrated book with rare visuals, it provides useful information on a subject about which very little has been written. Despite being a research study, it is extremely interesting and holds the attention of readers from beginning to end.

Inder Sawhney, Chief of Bureau, *Gujarat Samachar*, New Delhi

Interspersed with liberal photographs, 100 coloured and 600 black and white, judiciously selected, the book is written in a simple, easy to read, format and a visual delight –not just for the students of business history but for anyone with an interest in the spread of economic and cultural growth in the country...What makes the book interesting is that the author does not limit himself to history.

***Business India*, 23 November 2015**

There is no doubt that the coffee table book is an extensively sourced and a richly produced addition to the increasing body of literature on the Marwari community... Nevertheless, if you like your dal-batti-churma dripping with ghee, *The Marwari Heritage* will be a valuable addition to your table.

***DNA*, 10 January 2016**

AN ILLUSTRATED HISTORY OF

INDIAN BUSINESS

Proposed technical details of forthcoming coffee table book which will be published by the end of 2024.

Book size : 13" x 9.50", finished : 13" x 19" open

Pages : 350 pages + 8 end pages + plc + jacket, colour : 5+5

Rare visuals : 763 like paintings, b&w photos, line sketches, maps, documents etc.

Paper : plc & jacket : 150 gsm matt art paper,

text : 100 gsm renaissance

End pages : 190 gsm renaissance, fabrication

plc : matt lamination & raised uv

Jacket : matt lamination & raised uv

Binding: section sewn & perfect bind with case

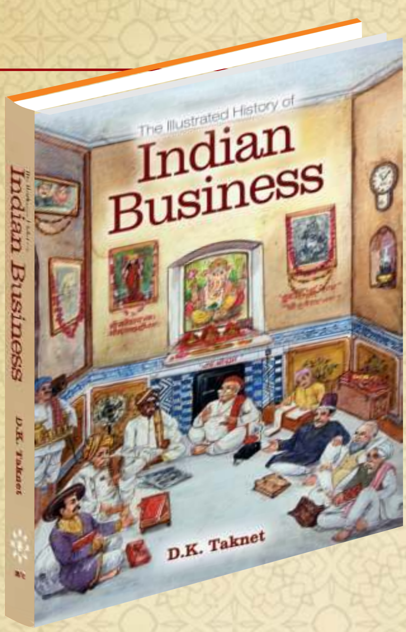

The emergence of business history as a distinctive branch of social sciences is a relatively recent development. Although, there has been considerable debate centred around Indian business over the past several years, historical research in this area has been relatively sparse. It was only later that some scholars began to make an objective assessment of the achievements of Indian business. This well illustrated book covers the historical roots of Indian business and highlights the entrepreneurial and business acumen of Indian traders under a variety of testing circumstances, demonstrating their skills, astute economic understanding, and willingness to explore their mettle against severe odds. This publication provides a basic understanding of the stages in the growth and development of Indian business.

The book is lavishly illustrated with rare visuals and charts the business history of India from the dawn of civilisation, across the Harappan, Mauryan, Mughal, and British periods, to the construction of the globally recognised 'India Inc.' brand. Today, the roots of Indian entrepreneurs are deeply enmeshed in the social, cultural and economic fabric of India. They have inherent potential to innovate, adapt to new technologies, and diversify into new areas. India's pre-eminent position as one of the world's fastest growing economy, owes much to the pioneering spirit, vision, and tenacity of the nation's entrepreneurship. The narrative is enriched by case studies of successful pioneers in the fields of business, manufacturing, and trading, thereby, illuminating their role in the evolution of business in India, and its spread across the world. It also examines the enormous inroads into the global business scenario made by these visionaries. Both the private and public sector have emerged as an important driving force in the new millennium and will be the benchmark of global standards of quality andcompetitiveness. The response of Indian business to the winds of globalisation and liberalisation, and the emerging business potential of India in the new millennium is presented in an analytical form up to present times.

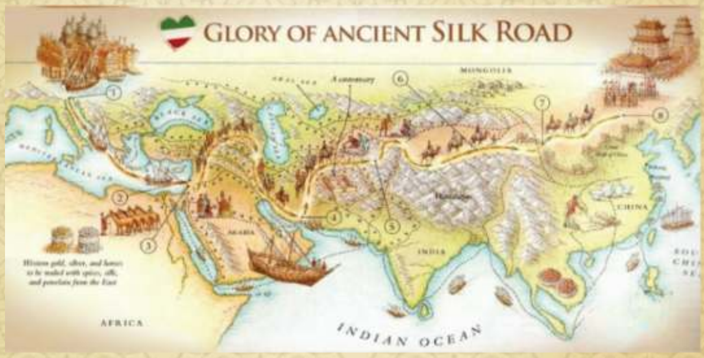

India has always looked forward, and in the twenty-first century, it is uniquely positioned to emerge as one of the foremost economic superpowers of the world. It is a commendable factor that the new generation of business community continues the Indian legacy of excellence and the future that it weaves will certainly bring greater prosperity and stature to our nation. They have achieved several milestones in these seven decades and produced global Chief Executive Officers. They dream big and plan to build on the foundations their forefathers envisaged and have continued to grow from strength to strength, marching ahead towards new horizons. Their entrepreneurial and professional skills have played a phenomenally successful role in several economic and business sectors which are indicative of the inborn Indian spirit of enterprise and the tradition of business it has fostered.

The younger generation has efficiently explored opportunities that have come their way to expand their business across national boundaries. They too have realised their vital responsibility towards the country's socio-economic development, and encouraged merely for their economic contributions, business strategies, and for their humanistic value systems. Equipped with high education and exposure to the best global practices, their quest for growth and utilisation of their rich pool of resources, and the right social network has strengthened them for new and sustainable ventures. Pioneering minds have given due importance to consistent quality, productivity, research and development, customer satisfaction, and optimal use of resources, both human and material, woven around the concept of the welfare of the community. Their innate psyche of giving back to society has prompted them to donate generously.

The concept of philanthropic activities, parting with a portion of one's surplus wealth for the welfare of society is neither modern nor a Western notion transported to India. It was well said: 'Wealth and knowledge not shared are useless.' The Skanda Purana advocates that one should use a certain percentage of justly earned income on good deeds or work for public benefit. Another important aspect inculcated from the Vedas is that earn from a hundred hands and distribute to thousands. The spirit of dana, hospitality and social welfare has always been an integral part of the Indian business which is covered in detail. At the helm of most successful entrepreneurial enterprises, Indian corporates focus more on innovation and technological advancement which has helped governments of several countries to seek their advice on economic growth. The coffee table book has rich cameos of some of these eminent business tycoons who deserve salutation for their praiseworthy contributions not only for the country but for the world as a whole.

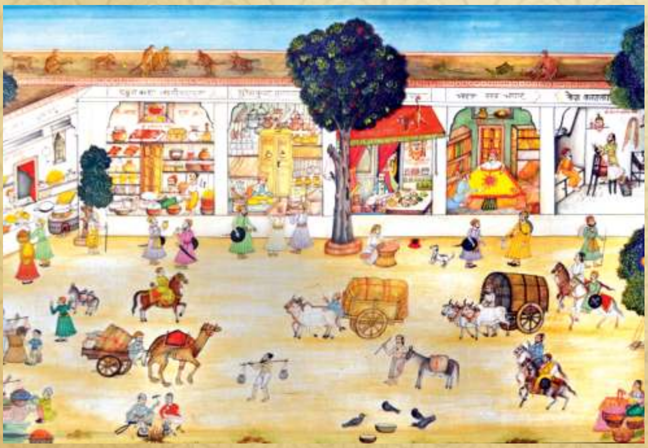

THE HERITAGE OF
INDIAN TEA

ISBN : 81-85878-01-3

First edition : 2002, second edition : 2003, third edition : 2005, fourth edition : 2009, fifth edition : 2012, Sixth edition : 2015, seventh edition : 2017, eighth edition : 2019, ninth edition : 2020, tenth edition : 2023

Book size : 11.5"x8.5", finished : 11.5"x17" open

Pages : 264 printed on imported art paper

Rare visuals : 370 like paintings, b&w photos, line sketches, maps, documents etc.

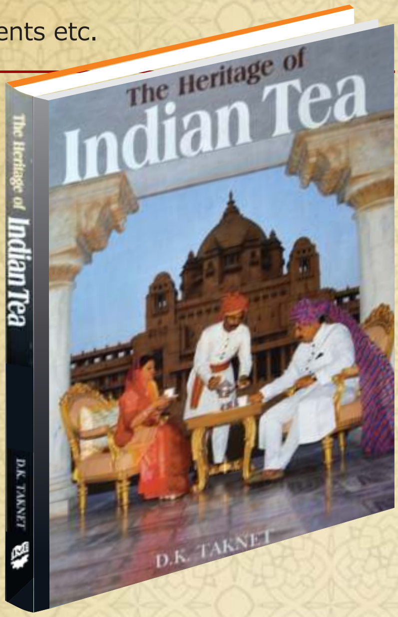

Tea has found a permanent place in the lives and hearts of diverse people all over the world, and has spread cheer and camaraderie for over 4500 years. Poets and philosophers have eulogised and extolled it, and perhaps no other beverage has been the object of such ritual and ceremony across the planet. Today, over three billion cups of tea are consumed every day across the globe, making it the most popular and inexpensive drink in the world after water. Its fragrance, flavour and gentle aroma generate a sense of pleasure, well-being, and fellowship across the world, round the clock.

India is the largest producer and consumer of tea in the world. Since the mid-nineteenth century, tea has been one of the largest foreign exchange earners and a prime source of state and central taxes. Being eco-friendly, it is also a caring industry that generates income and livelihood for nearly 20 million people in the country.

This coffee table book offers a perspective of the history of the tea industry in India, the role tea plays in our lives and that of our country, and the wide-ranging developmental initiatives that have for decades been undertaken by the Indian tea industry. This is a story that needs to be told because few are acquainted with the fascinating process through which the tea that enters their markets and homes passes prior to being a part of the cup they hold in their hands every morning, and how it beneficially impacts the lives of millions of hitherto marginalised individuals.

A well-researched and carefully documented book, it analyses the problems that threaten to bring the Indian tea industry to its knees and hamper its ability to invest, modernise, grow, and remain competitive in world markets. It raises important questions that deserve serious attention and, above all, decisive action. The author presents a balanced, scholarly, and comprehen-sive picture of the industry as a whole bringing many hitherto unexplored facets to light that will interest tea professionals and tea enthusiasts alike.

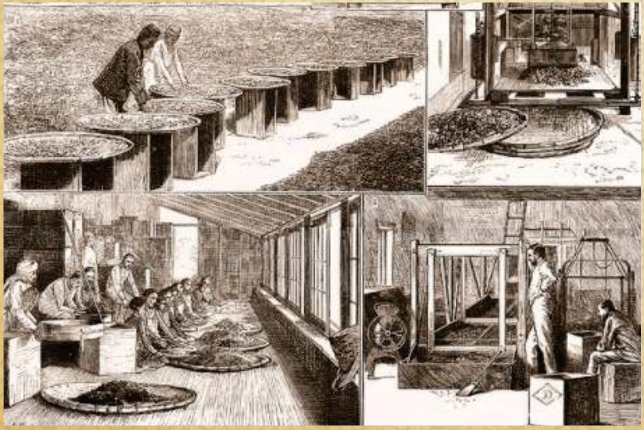

OPINIONS, VIEWS AND REVIEWS

This book explains the road ahead well. It is comprehensive in its coverage and contains striking photographs; especially of tea gardens...Combined with its well-researched history of tea-growing and tea companies, this book should be useful to all interested readers.

Atal Bihari Vajpayee, former Prime Minister of India

The history of the Indian tea industry is a glorious record of continuous development of a century-old industry which became a valuable national asset...the industry has also played a significant and key role in the socio-economic development of the tea-growing areas.

Yashwant Sinha, former Finance Minister, Government of India

My warmest congratulations to Dr. Taknet for his well-documented and beautifully illustrated book on the glory of Indian tea.

Murasoli Maran, former Minister of Commerce & Industry, Government of India

This well produced and documented book provides valuable information on various interesting facets of Indian tea.

K.C. Pant, former Deputy Chairman, Planning Commission

Dr. D.K. Taknet's book is a well-researched and insightful effort at providing a holistic perspective of the industry. This research study is extremely interesting because of its style and rare pictures...Overall, the work provides a well-rounded picture of the Indian tea industry.

Ratan N. Tata, Chairman, Tata Industries Ltd., Mumbai

It is a well researched and illustrated book of our tea industry...The book fills many gaps in earlier studies on the industry.

Khushwant Singh, Writer and Journalist, New Delhi

It is undoubtedly a landmark research study which provides an absorbing account of the growth and contribution of the tea industry over a century...Needless to say, the points brought out are worthy of consideration, particularly those relating to the socio-economic development of the country.

Abid Husain, former Ambassador to the USA and Secretary, Commerce, Government of India

The focus on the unsung heroes of the industry, the socially and economically deprived workers, adds a refreshingly new dimension to the study.

R.A. Mashelkar, Director General, CSIR & Secretary, Department of Scientific & Industrial Research, Government of India, New Delhi

This pictorial book is thoroughly researched and highly informative, shedding new light on the wide-ranging welfare activities of the industry simply but lucidly. We need more such studies on the corporate world to highlight its socio-economic role in the development of the country.

Chirayu R. Amin, Former President, Federation of Indian Chambers of Commerce & Industry, New Delhi

It is a very well-researched and enlightened scholarly work. Detailed analytical appraisal makes it a unique business history as well.

Prof. M.L. Sondhi, former Chairman, Indian Council of Social Science Research, New Delhi

Indian Oil
THE ENERGY OF INDIA

ISBN : 978-93-5267-542-5

First Edition : 2024

Book size : 11.5"x8.5", finished : 11.5"x17" open

Pages : 264 printed on imported art paper

Rare visuals : 370 like paintings, b&w photos, line sketches, maps, documents etc.

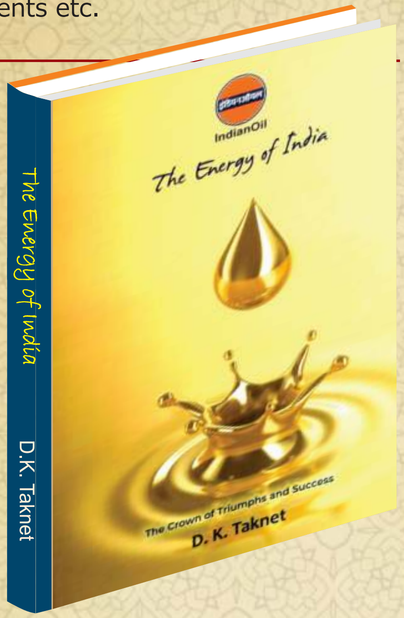

Today, oil is an indispensable commodity and is often viewed as a barometer of economic progress. Oil is the basic raw material for the manufacture of more than 5,000 varied goods used in every sphere of life. The history of the petroleum industry in India can be traced to the world's oldest running refinery, at Digboi, in Assam in 1901. Till India's independence from British rule, foreign oil companies ruled the roost and laid the ground rules on pricing and distribution.

This coffee table book, IndianOil- The Energy of India while elucidating the history of the global oil industry, highlights the role of IndianOil in post-independent India in ensuring energy equity, accessibility, and affordability. It has always been at the forefront of the country's energy sector, providing fuel and energy solutions to millions of people across the nation. IndianOil is a colossal entity, resembling a vast family comprising over thirty-one thousand employees and more than three lakh channel partners, encompassing LPG delivery personnel and retail outlet customer attendants, who diligently work towards powering the nation. The company operates the largest number of refineries in India with a group refining capacity of 80.55 million metric tonnes per annum. IndianOil has to its credit 50 years of pioneering research and technology.

The book highlights IndianOil's remarkable journey, its contribution to the nation's economy, and its vision for a sustainable future. As India continues to grow and evolve, IndianOil remains steadfast in its mission to meet the country's energy demands. In the year 2022, the company made the landmark pledge of Net Zero Operational emissions by 2046 and is now aggressively promoting the use of biofuels, enhancing its share of renewable energy, setting up hydrogen and electric vehicle infrastructure, and increasing operational efficiency of its refineries to achieve this goal. In 2046, the 100th year of India's independence, IndianOil will be creating a new landmark of Net Zero that would redefine India's energy landscape forever.

IndianOil's growth agenda and DNA is based on 'Pehle Indian Phir Oil'. To expand across new vistas and infuse new age dynamic growth of manpower, it is equipped with global technologies, cutting edge R&D and innovation. IndianOil employs the best global practices along with quality consciousness, affordability and transparency to all its customers through its strong marketing network. IndianOil is a responsible corporate that is conscious of its duty to the society in which it operates. Its community welfare programmes encompass about 500 projects across the length and breadth of the country and have been operational for decades. It supports and elevates the standard of living of the underprivileged sections of society through numerous initiatives.

Today, IndianOil has fulfilled the original mandate by serving millions of people through its nationwide refining, pipelines and marketing infrastructure, and has evolved into an integrated, diversified energy conglomerate. IndianOil which is often dubbed the Energy of India has metamorphosed into an iconic brand.

OIL

LIGHTING UP OUR LIVES

ISBN : 978-93-5267-542-5
First edition : 2016, second edition : 2017, third edition : 2020, fourth edition : 2023
Book size : 13"x9.50", finished : 13"x19" open
Pages : 511+ 8 end pages + plc + jacket, colour : 4+4
Rare visuals : 722 like paintings, b&w photos, line sketches, maps, documents etc.
Paper : plc & jacket : 170 gsm matt art paper
End pages : 190 gsm renaissance
Fabrication plc : matt lamination & raised uv
Jacket : matt lamination & raised uv
Binding : section sewn & perfect bind with case

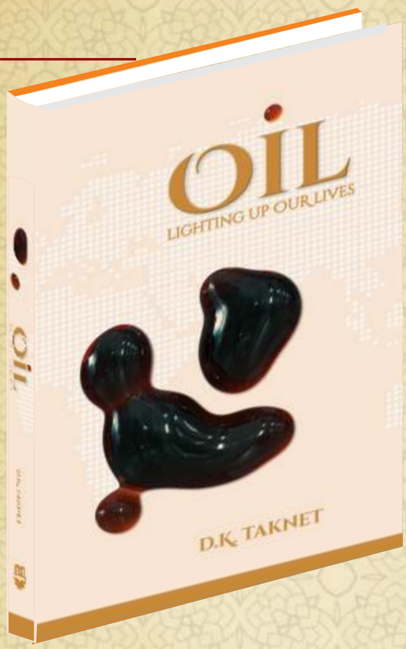

Oil, known to man even prior to the contemporary era, has found a permanent niche in the lives of people throughout the world, serving an extraordinary range of needs throughout the day and even when we are asleep. Our civilisation is ruled by oil and depends heavily on it than on any other single commodity. Its widespread availability and use became most pronounced during the First World War. Since then the world has continued to depend increasingly on it for a multitudinous range of products and services, most crucial among them being transportation.

The history of oil dates back to the dawn of civilisation. One of the earliest human civilisations that developed in the great river valleys of Mesopotamia, used asphalt obtained from hand-dug pits for caulking boats, and also for medicinal and ornamental purposes. Oil: Lighting Up Our Lives unfolds a worldwide overview of the history of the discovery, development, and uses of oil. It discusses in detail the global oil industry and how the geopolitics of oil and its availability has transformed the life of mankind and the destiny of nations; of the multifaceted role it plays in our everyday lives.

The reader is caught up in the excitement of the saga of early discoveries of oil worldwide, and in particular India, the breathless race to discover new uses and technologies, and their cataclysmic effects on men and nations. At the same time, the book does not lose sight of the catastrophic effects of oil on nature and the environment, and discusses ameliorative action. For all those with even a passing interest in history, international affairs, geopolitics, economics, and the environment, and the significant role that oil plays in them, this well-researched book presents an engrossing and all-embracing picture of the role of oil through the ages and, more particularly, in our time. The author's compelling narrative, supplemented by a rich kaleidoscope of over 722 visuals captures the imagination of the discerning reader.

OPINIONS, VIEWS AND REVIEWS

Dr. D.K. Taknet's book is well researched and insightful...packed with information, and those who made their fortunes from the oil industry. The wide range of illustrations in the book is a delight to the eye and supplements the text effectively. I have no doubt that the way in which the book is conceptualised and written will prove to be absorbing, exciting and educational for the reader.

Dharmendra Pradhan, Minister of State (I/C), Petroleum & Natural Gas, Government of India

Oil has played an important and pivotal part in the culture and civilisation of mankind since the dawn of history. Its importance has increased over the years as the principal source of energy. It has an impact on history and changed the maps of the continents. The fascinating story of oil from time immemorial to the present day, events which shaped its discovery and use, and people and institutions who played key roles, is told in this well researched and elegantly produced book by Dr. Taknet. He has produced a work of lasting importance. As we grapple with various issues, from economic to environmental, connected with this important commodity, this gripping saga of oil is an invaluable source of information and education. Dr. Taknet should be congratulated for producing a work of immense scholarship, and presenting it in an attractive and lucid manner.

Prof. V.S. Vyas, former Member, Economic Advisory Council to the Prime Minister

Dr. D. K. Taknet and his Institute have rendered signal service to the cause of Business History by bringing out coffee table books on significant themes...The present work, focusing on the antecedents and development of the petroleum industry, too, bears witness to painstaking research and analysis. Richly illustrated with appropriate captions which is a delightful and educative read on a subject of vast significance.

Dwijendra Tripathi, Professor of Business History (Emeritus), Indian Institute of Management, Ahmedabad

Painstakingly researched, well written and beautifully embellished with paintings, illustrations, etchings and photographs, this book is both a visual and intellectual feast. Dr. Taknet has written with great comprehensiveness and lucidity on a subject that plays a pivotal role in our daily lives and is of immense geo-strategic importance. The captivating style and fascinating subject make it very difficult to set this book aside. A must read, not just for oilmen, but also for sociologists and historians.

Vikas Singh, Deputy Executive Editor, *The Times of India*

Oil: Lighting Up Our Lives by Dr. D.K. Taknet, richly illustrated with photographs of the oil industry provides the reader with a splendidly graphic picture of the multifaceted uses of oil and the adventure and technology that enabled it...an example of the perfect harmony that can be achieved between text, subheads and rare visuals which make for absorbing reading. One of the best books on the history of the global oil industry ever written. The author has communicated with utmost lucidity and comprehensiveness. Its riveting style is hard to keep the illustrated book aside without reading it from page to page at one sitting. An absolute must for all the oilmen, future sociologists, researchers and historians.

Inder Sawhney, Chief of Bureau, *Gujarat Samachar*, New Delhi

B. M. BIRLA
A GREAT VISIONARY

ISBN : 81-7223-225-x
First edition : 1996, second edition : 1997, third edition : 2003, fourth edition : 2007
ifth edition : 2011, sixth edition : 2013, seventh edition : 2016, eighth edition : 2020
ninth edition : 2021
Pages : 188, colour pages : 16, black & white pages : 16

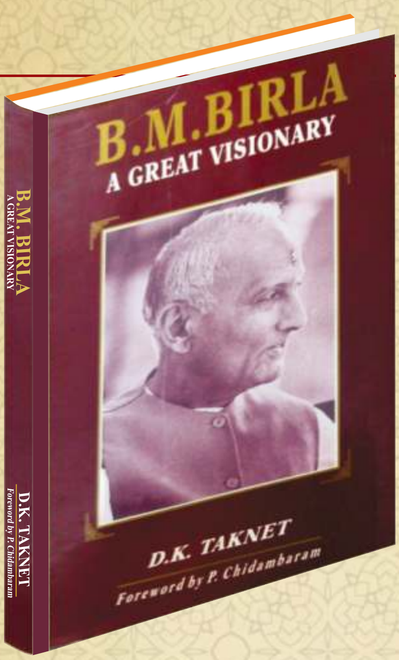

The Birlas have become a legend in the modern industrial world. In their phenomenal rise, Braj Mohan Birla (popularly known as BM) played a conspicuous role. There is hardly any sphere of national life in which he has not left a lasting impression. His deep interest in India's freedom, his concern for the overall happiness and prosperity of the entire nation and his lifelong stress on excellence made him known as a Karmayogi. Undertaking business activities was his inheritance and legacy but engaging in public service was his passion. All his actions bore the mark of his forward-looking progressive and creative mind. It is therefore not surprising that Professor A. William Fowler, the Nobel Laureate, compared BM with the third President of America, Thomas Jefferson. All these aspects of his multifaceted and dynamic personality are vividly presented in the book.

BM firmly believed that the prosperity of business and industry is closely interlinked with the prosperity of the nation. His initiatives in promoting industrial development in the country made him a pioneer among businessmen. He as a staunch votary of capitalism which according to him, was beneficial not only to the business community but also to the common people and the nation. His economic-vision has now been fully realised with the adoption of a free economy by the government. The author has highlighted the many and varied contributions made by him to the economic and social prosperity of the country, convincingly proving that BM belongs to a select galaxy of brilliant versatile men of the twentieth century.

OPINIONS, VIEWS AND REVIEWS

Dr. Taknet's is a reference work full of information about the industriousness and patriotism of the Birla family which is written in simple prose and is easy to read and understand. The present work, despite being a research study, is extremely interesting because of its style and is thus, a challenge to scholars in proving that authentic research works can also be an attractive and engaging read. The younger generation will definitely be inspired by reading it and learning from it a lesson in dedication, industry, patriotism and true service of humanity.

P. Chidambaram, Minister of State for Commerce, Government of India

The book presents a graphic account of his life - an outcome of profound study and thinking. This research work will be of special help to scholars.

K. Karunakaran, Union Industry Minister, Government of India

A distinguishing characteristic of the book is that the author avoids exaggeration and the many interesting topics covered makes it thoroughly readable.

Raja J. Chelliah, Chairman, National Institute of Public Finance Policy, New Delhi

Dipped into the book and found it most fascinating...He was truly a great man of this century.

Nani A. Palkhivala, Jurist, Mumbai

B.M. Birla was one of the few remarkable pioneers of Indian industry who conceived big ideas and pursued them to the stage of effective implementation...His son, GP furthered the tradition handed down by his father B.M. Birla.

Prof. A. M. Khusro, Economist, New Delhi

Dr. Taknet has done a commendable job in portraying the biography of Mr. Birla – the illustrious son of India.

Deepak Banker, President FICCI, New Delhi

Dr. Taknet has made his book readable through the qualities of substantial subject-matter, deep analysis of facts and extensive scholarship presented in a style at once authentic and simple, which holds the attention of readers from the beginning to end.

Khushwant Singh, Journalist, New Delhi

Dr. Taknet's well-researched study has special significance in this thrust area. The author has highlighted the socio-economic contribution of Birla in a fascinating way...which makes the publication unique in both the economic and literary worlds.

Prabhu Chawla, Editor-in-Chief & CEO, *Financial Express*

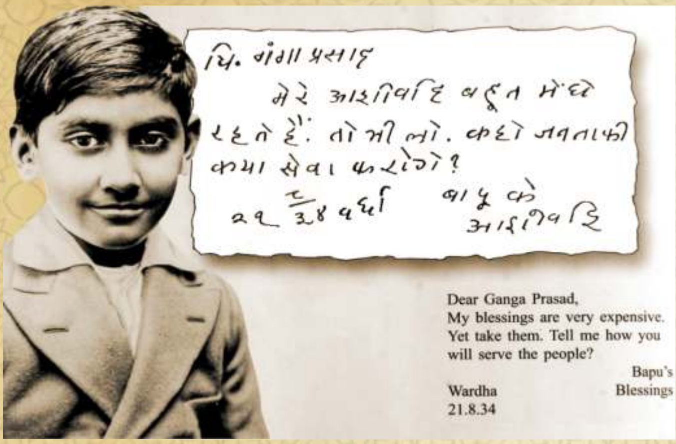

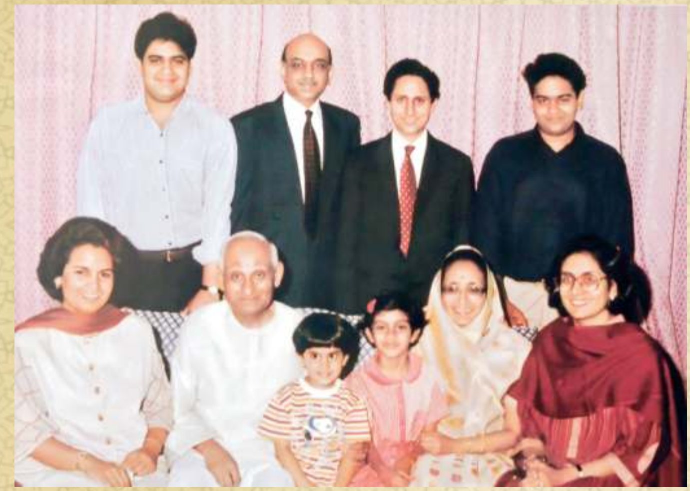

DIAMOND
DIVINE GIFT OF NATURE

Proposed technical details of forthcoming research-based art book which will be published by the end of 2024
Book size : 13" x 9.50", finished : 13" x 19" open
Pages : 450 pages + 8 end pages + plc + jacket, colour : 5+5
Rare visuals : 925 like paintings, b&w photos, line sketches, maps, documents etc.
Paper : plc & jacket : 170 gsm matt art paper, text : 100 gsm renaissance
End pages : 190 gsm renaissance
Fabrication plc : matt lamination & raised uv
Jacket : matt lamination & raised uv
Binding : section sewn & perfect bind with case

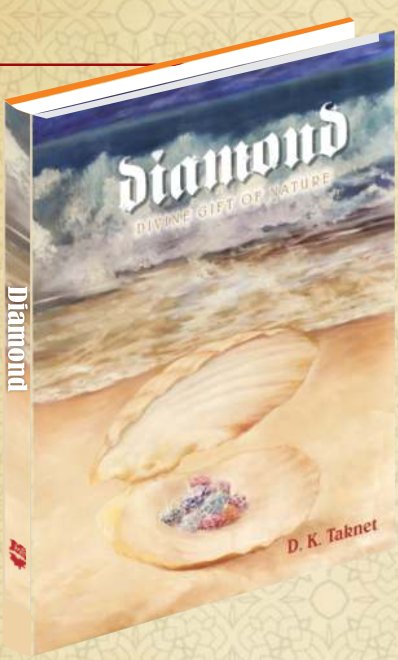

Diamonds have been a symbol of eternity, sublime beauty, wealth, fortune and power. The gemstone has always been coveted by kings and queens, rich and powerful. It is an aspirational symbol of prosperity even for ordinary people. A diamond is most sought after because of its rarity and brilliance, and the fact that it is a unique creation of nature. Its lure has ensured it a pivotal place in literature and folklore, romance and legends. The history of this glittering gem is in itself an extraordinary and fascinating story.

According to the Merriam Webster Dictionary, its origin is from the Greek word, 'adamas' meaning hardest metal. Diamonds are the hardest natural substance known to mankind. They are often used as a metaphor for strength, courage and invincibility. Most diamonds were formed deep inside the earth billions of years ago. They are older than the rocks in which they are found.

Diamonds are sometimes ejected out of the volcanic rocks and washed downstream to surrounding river beds or even to the coast. It takes expertise and diligence to find them. Diamonds, however, represent much more than unsurpassed beauty and sparkle. From its earliest days, the diamond has been imbued with mystique and superstition that has intrigued and delighted people throughout history.

In India, Dravidians were the first people to discover diamonds. They found them seven or eight centuries before Christ. India was a major source of diamonds till 1725, when they were discovered in Brazil. These are now mined on every continent except Europe and Antarctica. More than 90 per cent of the world's rough diamonds are cut and polished in Surat and Mumbai in India. Other important centres of diamond cutting and trading are Antwerp, London, New York, China, Thailand, Tel Aviv, Amsterdam and Johannesburg.

During the course of this research study, our extensive research cover its history, attraction and other aspects of the precious stone from production, cutting and polishing to the marketing of diamonds. For this purpose, it was planned to travel approximately, 1.5 lakh kilometres for researching and interviewing more than 5,000 people directly or indirectly associated with diamonds ranging from chairmen of companies to expert cutters and polishers who shape and polish the stones turning the natural stone into riches.

The planned pictorial book is meticulously researched and documented. This will take a holistic look at the contemporary scenario of the diamond and its market. The book will also highlight the contribution of international organisations of the diamond trade and industry. The narrative is enriched with case studies of successful pioneers in this field, illuminating their role in the evolution of the diamond trade in India, and its spread across the world.

Imbued with rare visuals brought into the public eye for the very first time, this volume will elaborate on the lesser known aspects from the past and the present diamond scenarios, blending the finest from its rich heritage. This volume is as serious about bringing out the history of its subject in depth as it is about digging out rare facts and photographs.

A special focus is on the contributions to socio-economic development made by the diamantaires and their organisations. Their tradition, legacy and heritage will be highlighted. The Roman naturalist Pliny has said that 'Diamonds are the most valuable, not only of precious stones, but of all things in this world.' These aspects are given due importance in this research study. Consisting approximately of 450 pages with over 925 rare, black and white and colour photographs, paintings, lithographs, fillups, maps, documents, illustrations and line sketches, the book is itself a gem which will capture the imagination of readers be they connoisseurs or laymen.

INDUSTRIAL ENTREPRENEURSHIP OF
SHEKHAWATI MARWARIS

First edition : 1986, second edition : 1987,
third edition : 2000, fourth edition : 2010,
fifth edition : 2011, sixth edition : 2013,
seventh edition : 2021
Pages : 14+264, colour pages : 8

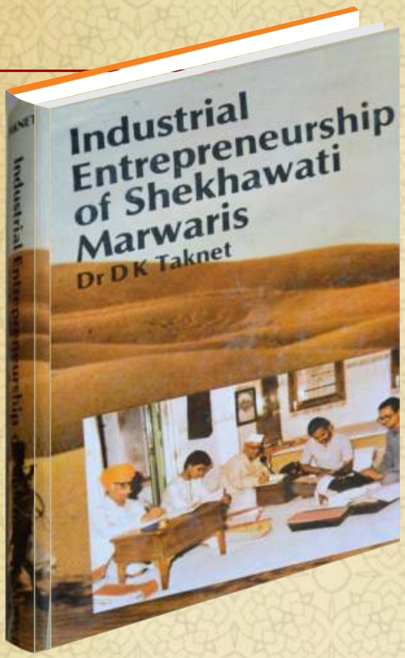

Marwari industrial entrepreneurship is indeed a research worthy and unique phenomenon, giving rise to this competent group of entrepreneurs and businessmen, who are a formidable force to reckon with in the business and industrial world. Born and bred in an area where nature taxes the very soul and spirit of a human being, where the struggle for existence is a continuous battle, the Marwaris of Shekhawati braved heavy odds and set out to distant places to earn a livelihood.

From these humble beginnings they grew into owners of industrial empires which not only set newly independent India on the path of self-reliance but made the Marwaris an organised business entity creating considerable ripples in the business capitals of the world.

The author deals with the factors, background, hardships and skill sets that have made the Marwaris what they are today. It chronicles the tactics they used, the acumen they developed and the techniques that they brought into focus to become practical masters of the Indian economic scene.

The volume is also the result of arduous and painstaking research into the traits of a pioneering race, the adventures of which are writ large on everything they did in business and industry. The spirit of adventure is reflected in the population in this area and those who could not enter business made it equally big in military and other services useful to the nation.

Ancient manuscripts were consulted at various places, a wide spectrum of people were interviewed and present-day entrepreneurs were persuaded to show family records and also recall the anecdotes and legends connected with their ancestors.

An enthralling mix has evolved. The development of the entrepreneurial skill of the Marwaris has been brought out elaborately. The story of their growth is told with candour and the secrets of their success have been analysed fascinatingly for the first time.

OPINIONS, VIEWS AND REVIEWS

Dr. D.K. Taknet has made a painstaking study of the Marwari community and the reasons for success of its members...The book provides useful information on a subject about which very little has been written.

Dr. Bal Ram Jakhar, Speaker, Lok Sabha

What impresses me most about your work is its empirical richness which has lent immense credibility to your findings and conclusions. The treatment of the subject is quite extensive and takes into account the diverse factors underlying the remarkable achievements of Marwaris.

Dr. L. K. Jha, Chief Economic Adviser to the Prime Minister

In our own country however, this subject has not received the attention it deserves. I, therefore, compliment Dr. D.K. Taknet for having made an in-depth study of Marwari entrepreneurship.

Dr. Manmohan Singh, Deputy Chairman, Planning Commission

It is highly informative and throws light on an extremely interesting socio-historical aspect of our industrial development.

Dr. C. H. Hanumantha Rao, Member, Planning Commission

The book presents excellent data of information on the legendary Marwari business houses...It has a remarkable and revealing chapter on the secrets of success of Shekhawati Marwaris and through several tables and maps provides the reader with a wealth of information, literature unobtainable.

Dr. A. M. Khusro, Chairman National Institute of Public Finance & Policy, New Delhi

Dr. Taknet draws out the factors that have made the Marwaris what they are today. The volume is also the result of arduous and painstaking research into the traits of the pioneering community.

Abid Husain, Member, Planning Commission

In his well-researched and exhaustively documented book, the author traces the progress of Shekhawati Marwaris over the centuries.

***Financial Express*, New Delhi**

The author deserves credit for his courage in analysing the shortcomings of the community and what ought to be done to arrest its decline from a position of undisputed pre-eminence.

***Business Standard*, New Delhi**

Dr. Taknet narrates the changing fortunes of Marwaris... interesting study of the nature and dynamics of Indian capitalism... Nevertheless, the book contains interesting facts about Marwari businessmen.

***The Hindustan Times*, New Delhi**

Dr. Taknet's account provides some fascinating details about the Marwaris...Taknet furnishes some interesting details about how many Marwari financiers became so powerful that many kings and nawabs in North India and Bengal became dependent on them. Taknet's brief and eulogistic narrations of some of the leading Marwaris bring out this bit quite prominently. Taknet's study also highlights Gandhiji's impact on some Marwari entrepreneurs.

***Money Matters*, New Delhi**

Taknet's work investigates primarily the rise of Shekhawati Marwaris and can be put into the first category. The author has divided the whole study into six chapters...A detailed discussion is presented on the economic, social and cultural contributions of the house of the Birlas, Singhanias, Bajajs, Dalmias and Podars.

***The Economic Times*, New Delhi**

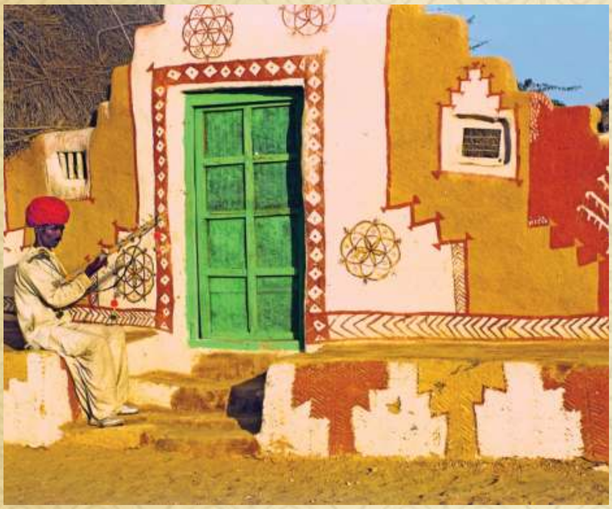

कलराज मिश्र
निमित्त मात्र हूँ मैं...

आईएसबीएन : 978–93–5407–878–1
प्रथम संस्करण : 2021
पृष्ठ संख्या : सत्रह+141, रंगीन चित्र पृष्ठ : 218, श्वेत–श्याम चित्र पृष्ठ : 47

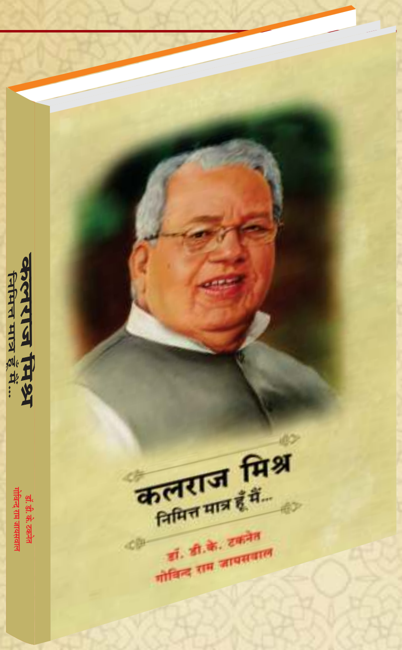

पिछले चार दशकों में मुझे विविध विषयों पर पुस्तकों के लेखन के संबंध में देश के अग्रणी राजनेताओं, समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों और उद्योगपतियों से भेंट कर उनसे संवाद करने का अवसर प्राप्त हुआ। जिनमें जे. आर. डी. टाटा, घनश्यामदास बिड़ला, धीरूभाई अंबानी, रामकृष्ण बजाज जैसे कर्मयोगी रहे तो ज्ञानयोगी के रूप में डॉ. शंकरदयाल शर्मा, अटल बिहारी वाजपेयी, डॉ. अब्दुल कलाम, डॉ. आर. ए. मशेलकर, डॉ. एल. के. झा, डॉ राजा जे चलैय्या, नानी ए. पालखीवाला ने मेरे अंतर्मन को प्रभावित किया। कांची कामकोटी पीठम् के आदि शंकराचार्य ने आध्यात्मिकता की नई दिशा दिखाई।

इन सभी महानुभावों का प्रतिबिंब देखने को मिलता है– माननीय कलराज मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में। मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पण, कार्य के प्रति निष्ठा और आत्मीय व्यवहार जैसे सद्‌गुणों को आत्मसात् करके ही वह एक कर्मयोगी व ज्ञानयोगी के रूप में उभरे हैं, जिनका पांच दशक का राजनैतिक जीवन इसका साक्षी है। कलराज मिश्र ने सदैव राष्ट्रवादी विचारधारा को पुष्पित तथा पल्लवित कर समाज के सम्मुख एक आदर्श रखा है। उनके हृदय में समाज के हर वर्ग के लिए संवेदनाएं हैं, जिनके कारण वे आज भी आमजन के चहेते बने हुए हैं। कार्यकर्त्ताओं के लिए पूर्णतः समर्पित रहते हुए उन्होंने समय–समय पर अनेक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय विषयों को प्रखरता से सार्वजनिक मंचों से उठाया।

उनका स्पष्ट मत है कि 'राजनीति सत्ता–सुख का नहीं अपितु जनकल्याण का माध्यम है।' उन्होंने जीवन–मूल्यों व नैतिक सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। मानवतावादी विचारों से ओत–प्रोत उनके जीवन का ध्येय, सदैव देश व समाज का हित करना रहा है। कलराज मिश्र ने राज्यपाल, केन्द्रीय मंत्री, लोकसभा, राज्यसभा, विधान परिषद व विधानसभा के सदस्य के रूप में अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

जीवन के विविध क्षेत्रों में, गौरवपूर्ण उपलब्धियों के साथ–साथ जनकल्याण की प्रबल आकांक्षा से ओत–प्रोत कलराज मिश्र ने देश के विकास एवं खुशहाली को एक नई ऊर्जा व गति प्रदान की। ऊर्जावान व्यक्तित्व के धनी कलराज मिश्र ने अपने राजनैतिक व सामाजिक जीवन में सदैव राष्ट्रहित को सर्वोपरि माना है, जिसके कारण वे अत्यंत लोकप्रिय हैं। साधारण कार्यकर्त्ता से कर्मयोगी बनने की उनकी यात्रा अत्यंत संघर्षपूर्ण एवं प्रेरणादायक रही है।

आज उनके सत्कार्यों की सुगंध चारों ओर महक रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन्हें बड़ा नेता बताते हुए उनके कृतित्व की भरपूर सराहना की है। उन्होंने कहा, ''बड़ा नेता क्या होता है और कैसा होता है, यह कलराजजी से सीखा। जब वे युवा मोर्चा का कार्य देखते समय, गुजरात के प्रवास पर आए, उस समय, मैं बहुत छोटा था और प्रायः उनके पास घंटों समय बिताता था। तब मैंने इनका बड़प्पन देखा। ऐसे लोगों के साथ कार्य करते और उन लोगों को देखते हुए मैं राजनीति में आया। इन लोगों ने ही मुझे बड़ा बनाया।''

उल्लेखनीय समीक्षाएं व प्रतिक्रियाएं

यह पुस्तक श्री मिश्र के बहुआयामी व्यक्तित्व तथा कार्यों की झलक के साथ एक साधारण कार्यकर्त्ता से लेकर राजभवन तक की उनकी यात्रा का सुरुचिपूर्ण संकलन है।...उनका व्यक्तित्व ज्ञान, कर्मठता और मर्यादा का सुन्दर समन्वय है। उन्होंने सदैव राष्ट्रवादी विचारधारा का अनुसरण कर समाज के सम्मुख एक आदर्श प्रस्तुत किया है। उनकी संवेदनशीलता तथा सहज व्यवहार ने उन्हें अत्यंत लोकप्रिय एवं आदरणीय बनाया है।

राम नाथ कोविन्द, राष्ट्रपति, भारत गणतंत्र।

शालीनता के साथ सादगीपूर्ण जीवन जीने वाले कलराज मिश्र एक कर्मठ नेता हैं। ये राजनीति के मर्मज्ञ हैं।...बड़ा नेता क्या होता है और कैसा होता है, यह कलराजजी से सीखा। जब वे युवा मोर्चा का काम देखते समय गुजरात के प्रवास पर आए, उस समय मैं बहुत छोटा था और अक्सर उनके पास घंटों रहता था, तब मैंने इनका बड़प्पन देखा। ऐसे लोगों को साथ काम करते और उन लोगों को देखते हुए मैं राजनीति में आया। इन लोगों ने मुझे बड़ा बनाया।

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत गणतंत्र।

पुस्तक का मैंने आद्योपांत अध्ययन किया। उनके छः दशक से भी अधिक समय के राजनैतिक तथा सार्वजनिक जीवन को एक पुस्तक के रूप में लिपिबद्ध करना अत्यंत ही कठिन कार्य है। लेखकगण ने उनके व्यक्तित्व के सभी रंगों को इस पुस्तक में भलीभांति संजोया है। इस पुस्तक ने अनायास ही मेरे जीवन के नवपरिणीता से लेकर राजभवन, राजस्थान पहुंचने तक के समय को कुछ ही पलों में मेरे मानस–पटल पर प्रकट कर दिया है।...सब कुछ मेरे सम्मुख जीवंत रूप में प्रकट हो गया है।

सत्यवती मिश्र, कलराज जी की धर्मपत्नी।

यह जीवनी एक अनमोल दस्तावेज है। कृति शोधपूर्ण होने के साथ–साथ अत्यन्त रोचक भी है। यह विद्वानों व लेखकों को बताती है कि प्रामाणिक तथा शोधपरक कृतियां भी आम पाठकों के लिए आकर्षक व रुचिप्रद हो सकती हैं। लेखकगण ने गहन अध्ययन के आधार पर श्री कलराज मिश्र की देश को दी गई बहुमूल्य सेवाओं पर बड़ी ही रोचक शैली में प्रकाश डाला है। पुस्तक पर हिन्दी साहित्य जगत गर्व कर सकता है, यह सराहनीय व अनुकरणीय है।

रमेश पोखरियाल, केंद्रीय शिक्षा मंत्री, भारत गणतंत्र।

राजस्थान के माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र पर प्रकाशित शोधात्मक एवं सचित्र जीवनी। यह एक शानदार कृति है।

डॉ. मनमोहन सिंह, भूतपूर्व प्रधानमंत्री, भारत गणतंत्र।

आईआईएमई, जयपुर द्वारा शोध परियोजनाओं के तहत कई दुर्लभ, संग्रहणीय, शोधपूर्ण तथा पुरस्कृत, सचित्र पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं, जिन्हें अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मान प्राप्त है। अपनी इसी परंपरा को जारी रखते हुए संस्था ने कलराज मिश्रजी पर बहुत ही आकर्षक पुस्तक तैयार की है। जिसके रंगीन, सजीव चित्र पाठक को बरबस ही अपनी ओर खींचते हैं। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी श्री कलराज मिश्र, मृदुभाषी और सहिष्णुता के पर्याय हैं। प्रकाशन हमारी पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के बीच बौद्धिक एवं सांस्कृतिक वैचारिक आदान–प्रदान में एक सेतु का कार्य करेगा।

डॉ. राजीव कुमार, उपाध्यक्ष, नीति आयोग, नई दिल्ली।

आपने कठोर परिश्रम द्वारा माननीय कलराज मिश्र जी की जीवनी को जीवंत रूप प्रदान कर दिया। उनके लिए इससे उत्तम उपहार नहीं हो सकता था। इस पुस्तक के बारे में विशेष रूप से जो चीज बरबस हृदय को आकर्षित करती है, वह है इसकी शानदार तस्वीरें और चित्र–सज्जा, जो राजस्थान राज्य के लिए भी एक उपहार है। मैं आपकी और आपके सह–लेखक की भी उल्लेखनीय रूप से उत्कृष्ट उत्पादन गुणवत्ता वाली इस कृति की रचना के लिए सराहना करना चाहता हूँ।

बिबेक देबरॉय, अध्यक्ष, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद व सदस्य, नीति आयोग, नई दिल्ली।

यह पुस्तक राजनीति और समाजसेवा से जुड़े जाने–माने व्यक्ति के अनुभवों और कार्यों से पाठकों को परिचित कराती है। आपने जिन तथ्यों को प्रस्तुत किया है वह श्री कलराज मिश्रजी के आदर्श, उनकी विचारधारा और प्रतिबद्धताओं से पाठकों का साक्षात्कार करवाते हैं। यह एक संग्रहणीय, शोधपरक ग्रन्थ है जो कलराजजी के समाज व देश के प्रति समर्पण भाव को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करता है। ऐसे ग्रंथ नई पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक बने रहेंगे।

प्रो.धीरेन्द्र पाल सिंह, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली।

श्री कलराज मिश्रजी पर लिखी गई यह किताब बहुत श्रेष्ठ और आकर्षक है। मैंने पहला पन्ना पलटा और पलटता चला गया। उनके कार्य, सफलताएं और राजनीतिक जीवन सभी कुछ गागर में सागर की तरह समेटा गया है। फोटो की गुणवत्ता तथा संयोजन भी बहुत अच्छा और आकर्षक लगा।

नवनीत गुर्जर, राष्ट्रीय संपादक, दैनिक भास्कर।

कलराज मिश्र जी के पूर्वजों की मिट्टी जिस क्षेत्र से संबंधित है, उनके जीवन के विविध आयामों को लेखकगण ने 'गीता' में 'कर्म' के सिद्धांत पर चलते हुए अपना मार्ग प्रशस्त किया तथा उनकी व्यावहारिक–आर्थिक सोच भी अत्यंत प्रेरक लगी। पुस्तक की प्रस्तुतीकरण शैली, प्रकाशन की सामग्री और समग्र गुणवत्ता वास्तव में अत्यंत उच्च स्तर की है।

प्रो. वी. के. मल्होत्रा, सदस्य सचिव, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।

अनवरत जागरूक सक्रियता का नाम है– श्री कलराज मिश्र। अध्ययन काल से लेकर अब तक वे सच्चे एवं सचेत समाजसेवी की भूमिका में हैं।... विश्वविद्यालयों को अकादमिक रूप से समृद्ध और अनुशासित बनाने की दिशा में आपकी सक्रियता को अनुभव किया जा रहा है। भारत को विश्वगुरु के पद पर पुनः प्रतिष्ठित होते देखने की आकांक्षा आपके व्यक्तित्व को विरल बनाती है।...बहुत श्रम के साथ इस पुस्तक का लेखन किया गया है।

प्रो.नन्द किशोर पाण्डेय, निदेशक, भारतीय हिंदी परिषद, इलाहाबाद।

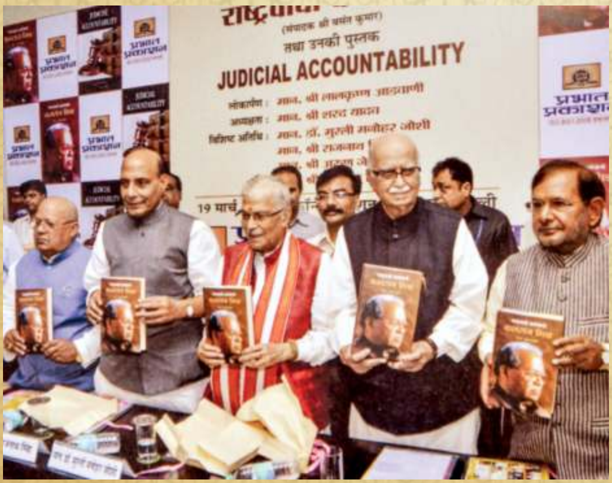

मारवाड़ी समाज

आईएसबीएन : 81–85350–00–0
प्रथम संस्करण : 1989, द्वितीय संस्करण : 1991, तृतीय संस्करण : 1995,
चतुर्थ संस्करण : 2000, पंचम संस्करण : 2005, षष्ठम् संस्करण : 2010
पृष्ठ संख्या : पन्द्रह+280, रंगीन चित्र पृष्ठ : सोलह, श्वेत–श्याम चित्र पृष्ठ : आठ

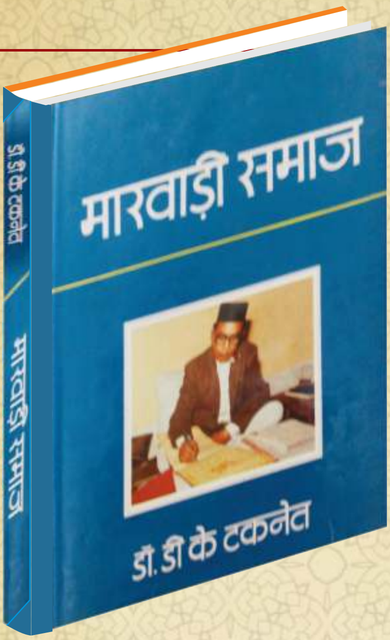

देश के निजी क्षेत्र के आधे से अधिक साधनों पर नियंत्रण स्थापित करना कोई सहज कार्य नहीं, लेकिन मारवाड़ियों ने अपने अद्भुत व्यक्तित्व एवं कृतित्व से इसे साकार कर दिखाया। आजादी के पहले छोटी–छोटी गद्दियों से शुरू हुई उनकी व्यावसायिक यात्रा आज वातानुकूलित कार्यालयों तक पहुंच गई है। आधुनिक तकनीक व प्रबंध के सहारे मारवाड़ी उद्यमियों ने देश में ही नहीं बल्कि विश्व में भी कई उत्पाद पहली बार प्रचलित किए। अब तो उनका औद्योगिक साहस राष्ट्रीय सीमाओं को लांघकर विश्वविख्यात हो चुका है। उनकी इस व्यावसायिक एवं औद्योगिक यात्रा का क्रमबद्ध अध्ययन इस पुस्तक में किया गया है। लेखक ने उन भौगोलिक, सामाजिक– सांस्कृतिक व आर्थिक कारणों का भी सविस्तार उल्लेख किया है, जो मारवाड़ियों की सफलता में सहायक सिद्ध हुए हैं।

अपने व्यापारिक हितों को तिलांजलि देकर देश की आजादी के लिए मारवाड़ी व्यापारियों ने 1857 की क्रांति से ही जो सक्रियता दिखाई वह हमारे इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है। नाना साहब पेशवा, तांत्या टोपे तथा अन्य क्रांतिकारियों की उन्होंने मदद की, जिसका सिलसिला आजादी तक जारी रहा। इस दौरान कई मारवाड़ी फांसी पर लटका दिए गए तथा कइयों ने कारावास का कठोर दंड भोगा। उन्होंने महात्मा गांधी एवं राष्ट्रीय नेताओं के इशारे पर अपनी धन–सम्पदा की थैलियों के मुंह खोल दिए। आजादी के लिए किए गए उनके प्रयासों का पहली बार इस पुस्तक में ऐतिहासिक और प्रामाणिक अध्ययन किया गया है। लेखक ने मारवाड़ियों के अतीत, वर्तमान एवं भविष्य पर एक सटीक दृष्टि डाली है।

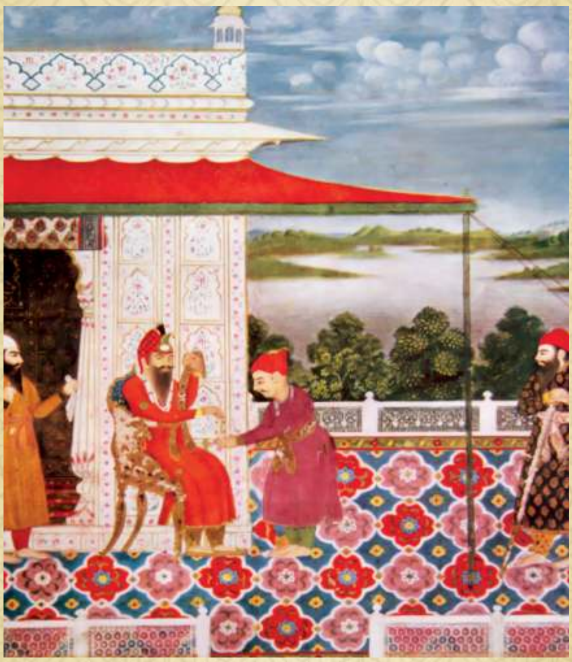

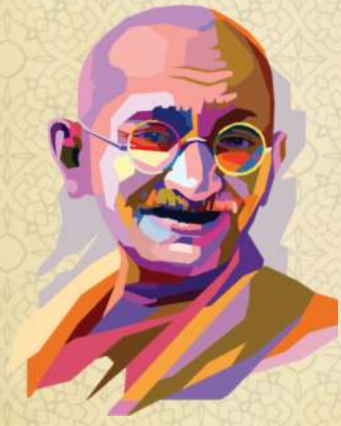

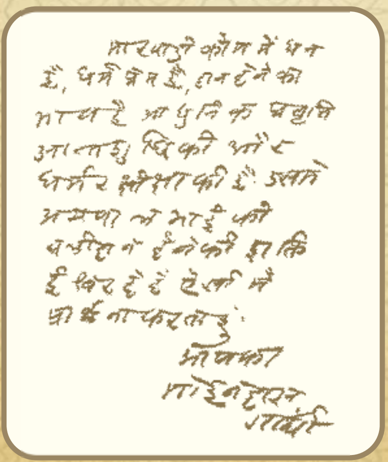

उल्लेखनीय समीक्षाएं व प्रतिक्रियाएं

डॉ. डी. के. टकनेत ने मारवाड़ी समाज के अतीत और वर्तमान को इस पुस्तक में प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत करने की कोशिश की है। उनके इस लेखन में शोध की दीप्ति दिखाई पड़ती है। इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

डॉ. शंकर दयाल शर्मा, उपराष्ट्रपति, भारत गणतंत्र।

अब तक प्राप्य विविध प्रकार की जानकारी को लेखक ने अपने वर्षों के परिश्रम से सुव्यवस्थित कालक्रम में प्रस्तुत कर इस ग्रंथ को प्रामाणिक, पठनीय और संग्रहणीय बना दिया है। पुस्तक की उपादेयता को देखते हुए निश्चित रूप से इसका विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद होना चाहिए।

प्रभु चावला, वरिष्ठ सम्पादक, इंडिया टुडे, नई दिल्ली।

इस पुस्तक में मारवाड़ी समाज के औद्योगिक कृतित्व को रोचक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। मारवाड़ी व्यापारियों की सफलता के कारणों का वैज्ञानिक ढ़ंग से शोधपूर्ण अध्ययन काफी उपयोगी है। आर्थिक इतिहास की दिशा में यह महत्त्वपूर्ण पुस्तक है, जिसमें सामग्री का चयन काफी सूझबूझ से किया गया है।

आबिद हुसैन, सदस्य, योजना आयोग, नई दिल्ली।

मारवाड़ी समाज की पुरानी बहियों, परवानों व अन्य प्राथमिक सामग्री के आधार पर तैयार की गई यह शोधपरक पुस्तक व्यापारिक जातियों के इतिहास में भी उल्लेखनीय ग्रंथ है। तथ्यों की गहरी छानबीन से पुस्तक बहुत अधिक उपयोगी बन गई है।

डॉ. ए. एम. खुसरो, सुविख्यात अर्थशास्त्री, नई दिल्ली।

डॉ. डी. के. टकनेत ने मौलिक ग्रंथों के अध्ययन और कठोर परिश्रम से इस पुस्तक को तैयार किया है। उन्होंने मारवाड़ियों के केवल व्यावसायिक योगदान पर ही नहीं बल्कि कई अन्य विषयों पर भी लिखा है। विशेषतौर से स्वतंत्रता आंदोलन में मारवाड़ियों के योगदान पर नई जानकारी पहली बार विस्तृत रूप से सामने आई है। पुस्तक की उपादेयता मोहक चित्रों, तालिकाओं, पाद–टिप्पणियों एवं परिशिष्टों से और भी बढ़ गई है। श्री टकनेत का यह प्रयास सराहनीय है।

राजेन्द्र माथुर, प्रधान सम्पादक, नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली।

डॉ. टकनेत ने क्रमबद्ध तरीके से मारवाड़ी समाज की आर्थिक प्रगति के साथ–साथ उसके कारणों की भी विशद् व्याख्या की है।...यह पुस्तक शोध की नई दिशाओं की ओर इंगित करती है।

हितेन भाया, प्रमुख प्रबंधशास्त्री व सदस्य, योजना आयोग, नई दिल्ली।

पुस्तक 'मारवाड़ी समाज' को एक दिन में ही पूरी पढ़ गया। यह मेरे लिए भी ताज्जुब की बात है...जिस तरह से यह किताब लिखी गयी, सभी दृष्टि से मुझे अच्छी और उपयुक्त लगी। आवश्यक सभी विषयों का चयन एवं चर्चा इसमें हो गई।...सचाई का भी ख्याल रखा गया है और अतिशयोक्ति करने से भी बच पाये हैं। यह अपने आप में बड़ी सिद्धि है।

रामकृष्ण बजाज, सुप्रसिद्ध उद्योगपति, मुम्बई।

ऐतिहासिक लेखन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण इस पुस्तक में मारवाड़ियों के सामाजिक, व्यापारिक एवं राजनीतिक इतिहास को प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया गया है। मारवाड़ी समाज के पूर्ण इतिहास के संबंध में यह एक नूतन एवं समग्र प्रयास है। लेखक की पैनी दृष्टि इस समाज के जिस किसी भी पक्ष के निरूपण की ओर घूमी है, उसका बारीकी से विश्लेषण किया गया है। डॉ. टकनेत ने अनेक विद्वानों के महत्त्वपूर्ण ग्रंथों के उद्धरणों से अपने कथन की परिपुष्टि की है, जो लेखक के गंभीर अध्ययन एवं परिश्रम का पारिचायक है।

हरि नारायण निगम, सम्पादक, दैनिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली।

वास्तव में मारवाड़ी समाज के पूर्ण इतिहास के संबंध में इस प्रकार की कृति की आवश्यकता बहुत समय से थी। इस अभाव की पूर्ति डॉ. डी. के. टकनेत ने अपने पुष्ट लेकिन सहज–सुबोध लेखन से की है। पुस्तक प्रामाणिक होने के साथ ही प्रेरक भी है, जिसमें मारवाड़ी समाज से संबंधित काफी सारगर्भित विषय सामग्री है जो पूर्व में उपलब्ध नहीं थी।

संतोष बागड़ोदिया, राज्य सभा सदस्य।

व्यापारिक जातियों के इतिहास पर कम ही काम हुआ है। मारवाड़ी जगत के आर्थिक अभ्युदय पर कुछ काम जरूर हुआ है किन्तु वह प्रशंसा मूलक होने से प्रभाव नहीं छोड़ सका जो ऐसी कृति से अपेक्षित रहता है। इस शोध अध्ययन के जरिए मारवाड़ी समाज के इतिहास के संबंध में समन्वित दृष्टिकोण अपनाकर इस कमी को पूर्ण करने का प्रयास किया गया है।...मारवाड़ी समाज ही नहीं बल्कि भारत के आर्थिक अभ्युदय में रुचि रखने वालों को यह कृति महत्त्वपूर्ण लगेगी।...कृति पठनीय एवं उपयोगी है।

राजस्थान पत्रिका, जयपुर।

मारवाड़ी समाज के आगे बढ़ने के कारणों का पता लगाने के लिए अनेक सामाजिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक संदर्भों में देखना जरूरी है। इस दिशा में डॉ. डी. के. टकनेत ने एक महत्त्वपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किया है। जिससे मारवाड़ियों के अतीत और वर्तमान के बारे में व्यापक जानकारी ही नहीं मिलती, बल्कि लेखक ने उनके भविष्य पर भी नजर डाली है।

दैनिक जनसत्ता, नई दिल्ली।

इस किताब में जिस विस्तार के साथ मारवाड़ी समाज के इतिहास, उनके मूल राजस्थानी इलाकों, उनके प्रवास, काम करने की शैली, परदेस में उनकी व्यावसायिक उपलब्धियों, आजादी के आंदोलन में उनके योगदान और मारवाड़ी समाज की भीतरी कमजोरियों का वर्णन किया गया है, वह इसे एक अव्वल दर्जे के संदर्भ ग्रंथ में रखने के लिए काफी है।...यह आर्थिक –व्यावसायिक इतिहास का एक अच्छा नमूना है।...यह किताब न केवल शोधकर्मियों और मारवाड़ी समाज के बारे में जानने के इच्छुक लोगों के लिए एक उपयोगी ग्रंथ है बल्कि युवा मारवाड़ी पीढ़ी के लिए भी एक नए आत्मविश्वास का स्रोत सिद्ध हो सकती है।

विजय क्रान्ति, वरिष्ठ पत्रकार, नई दिल्ली।

पुस्तक की छपाई अच्छी है। कुल मिलाकर एक संग्रहणीय तथा समाज के प्रति आपके समर्पण का चिरस्मरणीय शोध ग्रंथ है। इसके लेखन के लिए सारा समाज आपका ऋणी रहेगा।

वीरेन्द्र जालान, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच, गुवाहाटी।

मारवाड़ी समाज और
ब्रजमोहन बिड़ला

आइएसबीएन : 81–85878–00–5
प्रथम संस्करण : 1993, द्वितीय संस्करण : 1994, तृतीय संस्करण : 1995, चतुर्थ संस्करण : 2000,
पंचम संस्करण : 2004, षष्ठम संस्करण : 2010, सप्तम संस्करण : 2012,
अष्ठम संस्करण : 2015, नवम् संस्करण : 2018, दशम् संस्करण : 2021
पृष्ठ संख्या : बारह+260, रंगीन चित्र पृष्ठ : बारह, श्वेत–श्याम, चित्र पृष्ठ : बारह

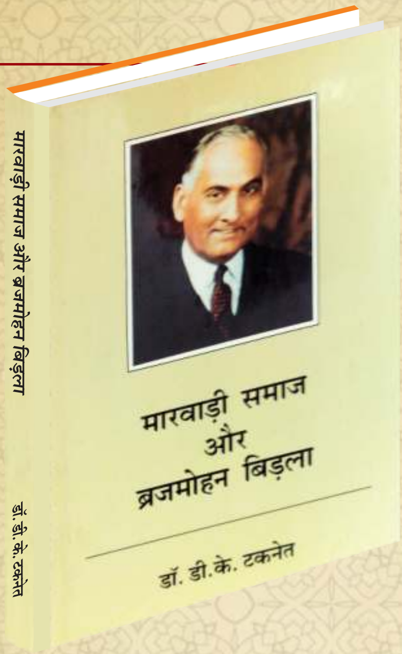

उद्योग–धंधों में क्रांति मचा देने वाले मारवाड़ी समाज ने देश के सामाजिक तथा आर्थिक विकास में उल्लेखनीय योगदान देकर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। जीवन के विविध क्षेत्रों में गौरवपूर्ण उपलब्धियों के साथ–साथ जनकल्याण की प्रबल आकांक्षा से ओतप्रोत इस समाज ने संपूर्ण राष्ट्र के विकास एवं खुशहाली को एक नई गति दी। इतिहास के सुनहरे पन्नों पर इसके बलिदान, साहस, सेवा, सूझबूझ, अध्यवसाय, मितव्ययिता, दूरदर्शिता एवं श्रम की सजीव कहानी बिखरी पड़ी है। इस पुस्तक में मारवाड़ी समाज के इसी बहुआयामी योगदान का संक्षिप्त लेकिन रोचक ढंग से उल्लेख किया गया है।

मानवता के इतिहास में सदैव ऐसे पुरुष जन्म लेते हैं जो अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बल पर न केवल समकालीन समाज को बल्कि देश की भावी सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों को भी प्रभावित करते हैं। बी एम के नाम से लोकप्रिय ब्रजमोहन बिड़ला देश के एक ऐसे ही सपूत थे, जिनकी समृद्ध भारत के निर्माण के प्रति सदैव प्रतिबद्धता बनी रही। उन्होंने देश की आजादी के लिए राष्ट्रीय नेताओं एवं क्रांतिकारियों की भरपूर मदद की। साथ ही पहली बार, कई नए उद्योगों का सूत्रपात कर अनेक उत्साही उद्यमियों को करोड़पति बनाया। अपने दूरदर्शी रचनात्मक विचारों और अनूठी व्यावसायिक संस्कृति के कारण उनकी आर्थिक युगदृष्टा के रूप में समूचे देश में ख्याति फैली। नोबेल पुरस्कार विजेता प्रो. विलियम फाउलर ने बी. एम. बिड़ला की तुलना अमरीका के तृतीय राष्ट्रपति टॉमस जैफरसन से की। इस पुस्तक में मारवाड़ी समाज तथा बिड़ला परिवार के इतिहास के साथ बी. एम. बिड़ला के बहुआयामी योगदान को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

उल्लेखनीय समीक्षाएं व प्रतिक्रियाएं

डॉ. टकनेत ने प्रस्तुत पुस्तक में शोधपूर्ण अध्ययन तथा रोचक शैली द्वारा श्री ब्रजमोहन बिड़ला के व्यक्तित्व और कृतित्व को यथार्थ रूप से उजागर करने का सार्थक प्रयास किया है। विश्वास है कि यह पुस्तक युवाओं में चेतना व देश के लिए समर्पित होने की भावना का संचार करेगी।

पी. वी. नरसिंह राव, भूतपूर्व प्रधानमंत्री, भारत गणतंत्र।

डॉ. टकनेत ने अपनी पुस्तक में मारवाड़ी समाज और ब्रजमोहन बिड़ला के राष्ट्र निर्माण के कार्यों में किए गए योगदान को संकलित करके एक सराहनीय प्रयास किया है।

चन्द्रशेखर, भूतपूर्व प्रधानमंत्री, भारत गणतंत्र।

डॉ. टकनेत ने गहरे अध्ययन के आधार पर मारवाड़ी समाज और ब्रजमोहन बिड़ला की सेवाओं पर बड़ी रोचक शैली में प्रकाश डाला है।

अटल बिहारी वाजपेयी, भूतपूर्व प्रधानमंत्री, भारत गणतंत्र।

श्री ब्रजमोहन बिड़ला ने औद्योगिक विकास को नई दिशा देकर देश की संस्कृति एवं टेक्नोलॉजी के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। डॉ. टकनेत ने अपनी पुस्तक में देश के विकास में मारवाड़ी समाज एवं श्री ब्रजमोहन बिड़ला की भूमिका पर समुचित प्रकाश डाला है, जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

डॉ. राजा. जे. चलैय्या, राजकोषीय सलाहकार, राज्य मंत्री, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार।

डॉ. डी. के. टकनेत ने इस पुस्तक के माध्यम से इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, प्रबंध और हिंदी विषयों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।... अधिकांशतः व्यावसायिक जातियों और बड़े उद्योगपतियों पर लिखी गयी पुस्तकों में विश्वसनीयता या पाठकों को बांधे रखने की क्षमता का अभाव होता है, लेकिन डॉ. टकनेत ने अपनी इस कृति को सारगर्भित विषय–सामग्री, तथ्यों की गहरी छानबीन और विशद् अध्ययन द्वारा प्रामाणिक और सहज लेखन द्वारा पठनीय बना दिया है, जो पाठकों को प्रारंभ से अंत तक जोड़े रखती है। पुस्तक के महत्व को मद्देनजर रखते हुए इसका अंग्रेजी व अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद होना चाहिए।

खुशवंत सिंह, वरिष्ठ पत्रकार, नई दिल्ली।

मारवाड़ी समाज के अध्ययन की शृंखला में लेखक की यह तीसरी पुस्तक है। श्री टकनेत ने इस सम्पन्न व्यवसायिक समाज की अनेक क्षेत्रों में जो देन हैं, उनका गंभीर अध्ययन किया है। उन्होंने सम्पन्नता के सकारात्मक पक्ष को इस प्रकार व्यक्ति के माध्यम से उजागर किया है।

विद्या निवास मिश्र, प्रधान सम्पादक, नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली।

नवयुवकों को प्रेरित करने के लिए ऐसी पुस्तकों का बहुत ही महत्त्व है। यहां अमेरिका जैसे देशों में तो ऐसी पुस्तकें बहुत सफल होती हैं...पुस्तक छपाई, भाषा तथा शैली की दृष्टि से भी बहुत श्रेष्ठ है।

प्रो. भूदेव शर्मा, प्रधान सम्पादक, विश्व विवेक, अमेरिका।

डॉ. टकनेत की पहली पुस्तक 'मारवाड़ी समाज' और बिड़ला परिवार के एक उद्यमी का यह जीवन चरित्र, मारवाड़ी उद्यमशीलता और देश के व्यापारिक औद्योगिक विकास में उनकी भूमिका को समझने में मदद करते हैं।

प्रभाष जोशी, पूर्व प्रधान सम्पादक, जनसत्ता, नई दिल्ली।

यह पुस्तक एक कर्मयोगी के अथक परिश्रम एवं संघर्ष का रोचक दस्तावेज ही नहीं...जीवन का सरस चित्रण भी है। अनेक रोचक प्रसंग...अंत तक पुस्तक को पठनीय बनाये रखते हैं...पुस्तक प्रेरणादायी ही नहीं, संग्रहणीय भी है।

शिवानी, सुप्रसिद्ध हिन्दी कथा लेखिका।

हमारे देश में व्यावसायिक जातियों और उनकी साहसिकता के संबंध में अभी तक बहुत कम शोध कार्य हुआ है। इस दिशा में डॉ. डी. के. टकनेत द्वारा लिखित यह शोध कृति विशेष महत्व रखती है। इसमें मारवाड़ी समाज की गौरवपूर्ण उपलब्धियों के साथ–साथ बी. एम. बिड़ला के व्यावहारिक अर्थशास्त्रीय चिंतन को एक साथ गूंथ कर ऐसी कृति तैयार की गई है जो औद्योगिक एवं साहित्यिक जगत को सदैव सौरभमयी करती रहेगी। आशा है इस शोध कार्य से प्रेरित होकर शोधवेत्ता व्यावसायिक साहसिकता पर और अधिक अध्ययन करने के लिए अभिप्रेरित होंगे।

प्रो. एम. एम. खुसरो, सम्पादक, फाइनेंशियल टाइम्स, नई दिल्ली।

यह पुस्तक सम्पूर्ण वैश्य समाज के गौरव का अनमोल दस्तावेज है। डॉ. टकनेत ने इस दिशा में जो कार्य किया है वह सराहनीय और अनुकरणीय है।

बनारसीदास गुप्त, पूर्व मुख्यमंत्री, हरियाणा।

यह कृति शोध अध्ययन होते हुए भी, 'अंदाजे बयां' के कारण अत्यन्त रोचक है और विद्वानों के लिए चुनौती है कि प्रामाणिक तथा शोधपरक कृतियाँ भी आम पाठक के लिए आकर्षक हो सकती हैं।...यह ऐसी पुस्तक है जिस पर हिन्दी जगत गर्व कर सकता है।

जयप्रकाश भारती, वरिष्ठ पत्रकार, दैनिक हिन्दुस्तान।

मेरा जो कुछ हिन्दी का ज्ञान है उसके आधार पर यह कह देना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जीवन–कथा के बारे में मैंने ऐसी पुस्तक नहीं पढ़ी है, जिसमें लिखने की शैली भी अनोखी है।

राधाकृष्ण बिरला, भूतपूर्व संसद सदस्य, नई दिल्ली।

यह ग्रंथ बिड़ला परिवार की श्रम–साधना एवं देशभक्ति की जानकारी से परिपूर्ण संदर्भ ग्रंथ है। इसे पढ़कर नयी पीढ़ी लगन, श्रम, देशभक्ति तथा मानवता की सच्ची सेवा का पाठ सीखकर प्रेरणा ग्रहण करेगी। पुस्तक अतुलनीय है।

डॉ. गिरिजाशंकर त्रिवेदी, संपादक नवनीत, नई दिल्ली।

आशियानों का सफरनामा

आईएसबीएन : 978–81–935143–0–6
प्रथम संस्करण : 2023
पृष्ठ संख्या : 151

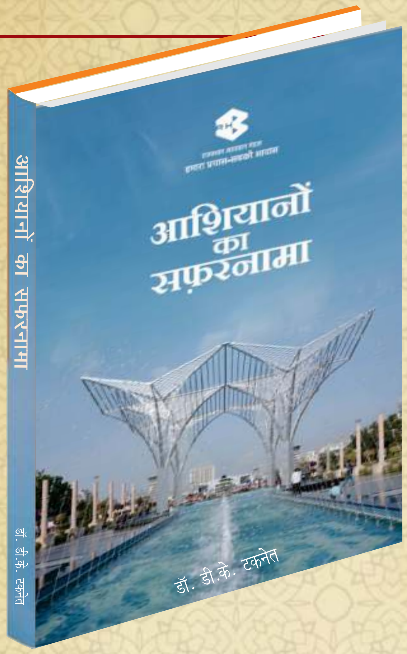

मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं भोजन और कपड़े के बाद आवास ही सबसे महत्त्वपूर्ण है। आज समूचा विश्व इसकी कमी से जूझ रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा सन् 1987 में आवासहीनों को आवास उपलब्ध कराने के उद्देश्य से इस वर्ष को अन्तरराष्ट्रीय आवास वर्ष के रूप में मनाया गया। हमारे देश में सन् 1992 में राष्ट्रीय आवास नीति को संसद द्वारा अनुमोदित किए जाने के बावजूद भी देश में आवास निर्माण के क्षेत्र में वांछित प्रगति नहीं हो पाई। हालांकि भारत सरकार के साथ कुछ राज्य सरकारें भी आवास उपलब्ध कराने की दिशा में प्रयत्नशील रही हैं, लेकिन बढ़ती आबादी के अनुपात में उनके प्रयास भी लक्ष्य प्राप्त करने में असफल रहे।

संयुक्त राष्ट्र संघ व भारत सरकार के प्रयासों से पूर्व ही आवास के महत्त्व को समझते हुए राजस्थान सरकार ने जन–साधारण को आवास उपलब्ध कराने की दिशा में ठोस कदम उठाते हुए सन् 1970 में ही राजस्थान आवासन मंडल की स्थापना कर दी थी। यह देश भर में पहला ऐसा अभूतपूर्व कदम था जिसकी चर्चा चारों तरफ हुई। आवासन मंडल ने कम समय में ही उल्लेखनीय प्रयास कर नई कॉलोनियां सृजित करते हुए आवास निर्माण कार्य को गतिशीलता प्रदान की। जयपुर में नाहरी का नाका आवासीय योजना से प्रारंभ हुई आवासन मंडल की यह यात्रा शीघ्र ही राज्य के सात शहरों में फैल गई। तदुपरान्त संपूर्ण राजस्थान में इसकी कई आवासीय योजनाएं विकसित हुईं, जिनका लाभ आमजन को मिला। मंडल की इस यात्रा के दौरान कई उतार–चढ़ाव भी आते रहे।

आज आवासन मंडल के गतिशील एवं कर्मठ नेतृत्व ने नई व अनूठी विपणन नीतियां बनाकर तथा मानवीय संसाधनों का समुचित उपयोग कर नए आयाम स्थापित किए हैं और पिछले चार वर्षों में राजस्थान आवासन मंडल को पुनर्जीवित कर दिया है। विभिन्न आय वर्गों के लिए अलग–अलग तरह की प्रतिष्ठित आवासीय एवं वाणिज्यिक योजनाएं देश में पहली बार प्रस्तुत की गई हैं। समयानुसार मंडल आज लीक से हटकर कई अनूठी योजनाओं को लेकर क्रियाशील है। जिनमें मुख्यतः देश का प्रथम कोचिंग हब, विधायक आवास परियोजना, सिटी पार्क, कॉन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान, चौपाटियां एवं अन्य विभिन्न आवासीय योजनाएं शामिल हैं। मंडल की सफलता का अंदाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि सन् 2018–19 में मंडल का टर्नओवर मात्र एक सौ अठारह करोड़ रुपए था, जो विगत चार वर्ष की अवधि में कई क्षेत्रों में किए गए नवाचारों के कारण नौ हजार दो सौ करोड़ रुपए से अधिक हो गया है।

राजस्थान आवासन मंडल द्वारा अपनी स्थापना से अब तक राज्य के सड़सठ शहरों व कस्बों में विभिन्न आय वर्गों हेतु दो लाख छप्पन हजार आठ सौ आवासीय इकाइयों का निर्माण कार्य पूर्ण कर लिया गया है। आवासन मंडल की कार्य–संस्कृति, लोकप्रिय व जन–कल्याणकारी नीतियों, अनूठे नवाचारों, अनुपम स्थापत्य कला एवं समय से पूर्व श्रेष्ठ गुणवत्ता के साथ निर्माण के कारण कई स्थानीय व विदेशी संगठनों द्वारा मंडल की सफलता का अध्ययन किया जा रहा है। कई अन्य कीर्तिमानों के कारण राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा इसको समय–समय पर छियालीस से अधिक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

रेरा के प्रावधानों की सौ फीसदी पालना करने वाला यह देश का पहला संस्थान है। साथ ही देश की ख्यातनाम स्कॉच स्टेट ऑफ गवर्नेंस–2022 की रिपोर्ट के आधार पर आवासन मंडल देशभर में दूसरे साल भी पहला स्थान हासिल कर आज राष्ट्रीय स्तर पर रोल मॉडल बन गया है।

उल्लेखनीय समीक्षाएं व प्रतिक्रियाएं

विगत चार वर्षों में आवासन मंडल ने प्रतिस्पर्धात्मक चुनौतियों का सामना करते हुए विभिन्न प्रतिष्ठित आवासीय एवं वाणिज्यिक परियोजनाओं का शुभारम्भ किया, जो अपने आप में कीर्तिमान है। देश का प्रथम कोचिंग हब, विधायक आवास सिटी पार्क, राजस्थान कॉन्स्टिट्यूशन क्लब, एआइएस रेजीडेंसी, एसएस रेजीडेंसी, चौपाटियां, मुख्यमंत्री शिक्षक एवं प्रहरी आवास तथा मुख्यमंत्री जन–आवास योजनाएं उल्लेखनीय हैं। राजस्थान आवासन मंडल का वर्ष 2018–19 में टर्न ओवर मात्र 110 करोड़ रुपए था, जो चार वर्षों में 9,200 करोड़ रुपए से अधिक हो गया। मंडल की लोकप्रिय जनकल्याणकारी नीतियों के कारण इसे समय–समय पर राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया है। एक छोटी–सी शुरुआत से लेकर अब तक की इसकी यात्रा अनुकरणीय है। आशा है इस कॉफी टेबिल बुक के माध्यम से आवासन मंडल के गौरवमयी इतिहास और इसकी स्वर्णिम उपलब्धियों को जन–सामान्य के समक्ष प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करते हुए मंडल की योजनाओं की प्रगति को जन–जन तक पहुंचाया जा सकेगा।

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

राजस्थान आवासन मंडल ने आशियानों का सफरनामा नामक कॉफी टेबिल बुक का प्रकाशन किया है, जिसमें मंडल की विभिन्न गतिविधियों को चित्रात्मक एवं मनमोहक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। आम लोगों के हितों को सर्वोपरि मानकर आवास उपलब्ध कराने व जनसेवा का जो कार्य राजस्थान आवासन मंडल द्वारा किया जा रहा है, वह एक सराहनीय पहल है।

सुखविंदर सिंह सुक्खू, मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश

विगत कुछ वर्षों से राजस्थान आवासन मंडल ने अपनी अनूठी कार्य–संस्कृति के बलबूते पर प्रदेश में कई योजनाओं को अमलीजामा पहनाया है। इसके अतिरिक सामाजिक सरोकारों को भी मंडल द्वारा काफी महत्व दिया जा रहा है। प्रसन्नता का विषय है कि राजस्थान आवासन मंडल की अविस्मरणीय सफलता पर आज केस स्टडी के रूप में निजी व राजकीय संस्थान अध्ययन कर रहे हैं। आवासन मंडल के आयुक्त पवन अरोड़ा और उनकी टीम बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने सुप्तप्रायः आवासन मंडल को पुनः सशक्त कर इसे सुदृढ़ कर दिया है। इस बहुरंगी कॉफी टेबिल बुक ने मंडल की स्थापना से लेकर अब तक के इतिहास, गतिविधियों, उपलब्धियों दस्तावेजों तथा पुरस्कारों को सविस्तार, सुसज्जित, चित्रात्मक व मनभावन तरीके से दर्शित किया है।

शांति धारीवाल, स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन विभाग मंत्री, राजस्थान

आज देश में कुछ सरकारी संस्थान अपने अनूठेपन व सामाजिक उपादेयता के लिए जनहित के उल्लेखनीय एवं बहुआयामी कार्य कर रहे हैं, लेकिन उन पर लेखन के अभाव के कारण जनसामान्य उनकी उपलब्धियों से वाकिफ नहीं हो पाता है। इस आकर्षक चित्रात्मक पुस्तक में शोधपूर्ण अध्ययन तथा रोचक शैली द्वारा लेखक डॉ. डी. के. टकनेत ने राजस्थान आवासन मंडल के वर्तमान, अतीत व भविष्य के बहुआयामी योगदान पर सटीक दृष्टि डालते हुए यह प्रमाणित कर दिया है कि सरकारी मार्गदर्शन, सशक्त नेतृत्व टीम भावना, अनूठी कार्य–संस्कृति, मेहनत, साहस, नवाचार और मानव के प्रति गहरे लगाव से सरकारी उपक्रम निजी क्षेत्र की तुलना में भी बेहतरीन परिणाम दे सकते हैं। इस पुस्तक का हिन्दी जगत में लिखी गई पुस्तकों में अपना अलग और विशिष्ट स्थान होगा। सारगर्भित सामग्री, विशद् अध्ययन, प्रामाणिक व सहज लेखन, सजीव रंगीन चित्रों तथा आकर्षक साज–सज्जा द्वारा यह पठनीय व रुचिप्रद बन गई है जो पाठकों को प्रारंभ से अंत तक जोड़े रखती है। यह प्रेरक, सराहनीय व अनुकरणीय है, जिसके महत्त्व को मद्देनजर रखते हुए इसका अंग्रेजी व अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद होना चाहिए।

गिरधर झा, सम्पादक, आउटलुक मैगजीन

'आशियानों का सफरनामा' एक बेहतरीन कॉफी टेबिल बुक है। यह सिर्फ राजस्थान आवासन मंडल की उपलब्धियों का लेखा–जोखा नहीं है अपितु यह राजस्थान की एक अहम विकास–यात्रा है, जिसके गवाह हम सभी हैं। राजस्थान आवासन मडंल ने अपनी कार्यशैली में जिस तरह नवाचारों को शामिल किया, ग्राहकों में भरोसा पैदा किया वह प्रशंसा के योग्य है। इस कॉफी टेबिल बुक में सभी जरूरी तथ्यों को शामिल किया गया है। चित्रों, संस्मरणों और तथ्यों का यहां सही संयोजन किया गया है, जो प्रशंसनीय है।

नवनीत गुर्जर, राष्ट्रीय सम्पादक, दैनिक भास्कर

वीर बिड़द सिंह टकनेत
आजाद हिन्द फौज के पहले राजस्थानी सेनानी

आईएसबीएन : 978–93–340–0911–8
प्रथम संस्करण: 2024
पृष्ठ संख्या : 168

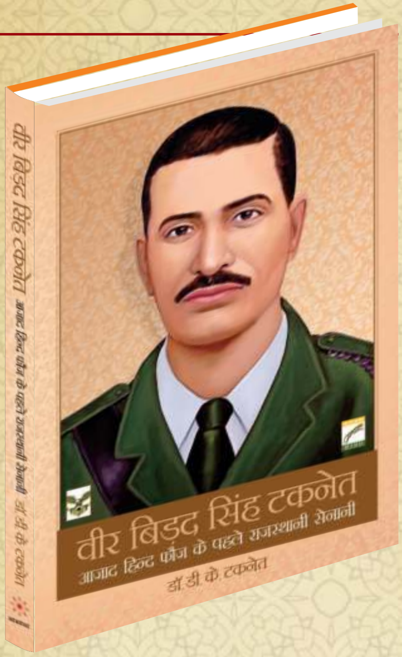

अमर शहीदों की वीरभूमि राजस्थान के साहसी, स्वाभिमानी, सुशासनप्रिय व रणबांकुरे योद्धा अपने बलिदान तथा क्षात्र धर्म के लिए संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध रहे हैं। उनकी गौरव गाथाएं अत्यंत लोमहर्षक एवं रोचक हैं। राजस्थान के अंचल शेखावाटी के पांच हजार वर्षों के इतिहास में महाराव शेखाजी व उनके वंशजों के राज्यारोहण तथा विजय अभियान अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। शताब्दियों से शेखावाटी शहीदों, सेनानियों व सेठों की धरा के रूप में पहचानी जाती रही है। यहां के रणबांकुरों का अदम्य साहस, वीरता तथा शौर्य अतुलनीय है। राजस्थान 'जुझार योद्धाओं' के लिए आरंभ से विश्वविख्यात है, जहां अनेक ऐसे वीर हुए हैं, जो मातृभूमि की रक्षार्थ शीश कटने के उपरान्त भी युद्धरत रहते थे। इतिहास में ऐसे विभिन्न मर्मस्पर्शी दृष्टांत प्राप्त होते हैं। शेखावाटी में ऐसे सेनानियों का आज भी बाहुल्य है, जिनके लिए मातृभूमि की रक्षार्थ प्राणों को न्यौछावर कर देना सच्ची वीरता एवं परम सौभाग्य का प्रतीक है, जिनका वर्णन प्रस्तुत कॉफी टेबिल बुक में किया गया है। शेखावाटी के प्रवर्तक एवं प्रथम पुरुष महाराव शेखाजी के सबसे ज्येष्ठ पुत्र दुर्गाजी थे, जिनके वंशज 'टकनेत' कहलाए। इनके सम्बन्ध में इतिहास में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है।

प्रस्तुत पुस्तक में टकनेतों के संबंध में दुर्लभ सामग्री पहली बार एक ही स्थान पर संगृहीत की गयी है। यही नहीं, शेखावाटी अंचल के कर्मवीर सेठों का साहस, व्यापारिक सूझबूझ तथा बुद्धि–चातुर्य से धन अर्जित करने और इन सबसे बढ़कर उपार्जित धन को देश व समाज हित में समुचित रूप में पुनः समर्पित करने के रोचक एवं तथ्यात्मक इतिहास को भी शब्दरूप में यहां प्रस्तुत करने का पूर्ण प्रयास किया गया है। यह सर्वविदित है कि शेखावाटी के उद्यमी आज देश की सीमाओं को लांघकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक सशक्त और सर्वमान्य आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहे हैं, जो वर्तमान पीढ़ी के लिए निश्चित रूप से अत्यंत ही प्रेरणादायी तथा अनुकरणीय है।

राजपूताना राइफल्स से अपना सैन्य जीवन प्रारंभ करने वाले वीर बिड़द सिंह टकनेत आजाद हिन्द फौज में भर्ती होने वाले राजस्थान के पहले सेनानी थे। उनका अतुल्य साहस, घोर संघर्ष व बलिदान स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास की एक विशिष्ट गाथा है। भारत माता को स्वतंत्र कराने की तीव्र इच्छा के कारण शेखावाटी के सैकड़ों सेनानियों को आजाद हिन्द फौज में भर्ती करवाकर सब–ऑफिसर बिड़द सिंह टकनेत ने अंग्रेजों के विरुद्ध बर्मा व निकटवर्ती अनेक मोर्चों पर लड़ाइयां लड़ीं तथा शत्रु को लगातार परास्त किया। न केवल नेताजी सुभाष चन्द्र बोस अपितु आजाद हिन्द फौज के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भी इनकी वीरता, युद्धनीति व मातृभूमि के लिए आहुति देने हेतु सदैव तत्पर रहने की प्रेरक भावना को हृदय से सराहा। जब फौज में धनाभाव हुआ तो स्वयं के व्यक्तिगत संबंधों के बल पर बर्मा के मारवाड़ियों से बड़ी धनराशि की व्यवस्था आजाद हिन्द फौज के लिए सहयोग के रूप में की। आजाद हिन्द फौज के इतिहास में यह योगदान एक स्वर्णिम अध्याय के रूप में आज भी अंकित है।

बर्मा के अराकान, मांडले व पेमना मोर्चों पर अंग्रेजों के विरुद्ध एक माह तक लगातार लड़ते हुए सैनिकों, संसाधनों व युद्ध–सामग्री का अत्यधिक अभाव हो गया था, किन्तु वीर बिड़द सिंह अपनी देशभक्ति की भावना व उत्साह के बलबूते, मोर्चे पर अविचलित होकर डटे रहे। फौज के बचे हुए साथियों के साथ एक बार फिर से उन्होंने अंग्रेज शत्रुओं पर भयंकर आक्रमण किया, जिसमें अढ़ाई सौ से अधिक शत्रु सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। गोला–बारूद समाप्त होने के बाद अंततः वह राइफल की संगीन से अंग्रेजों का पेट चीरते हुए आगे बढ़ते चले गये। गोलियों ने इस दौरान वीर बिड़द सिंह को घायल कर दिया, किन्तु अपने अदम्य बल, वीरता, साहस, जुझारूपन तथा आत्मशक्ति के बल पर वह अंग्रेज सैनिकों के असले (शस्त्रागार) तक पहुंच गये। उन्हें एकाएक आया देखकर अंग्रेज सैनिक चौंक गये, जिससे अंग्रेज सैनिकों की छावनी में भगदड़ मच गयी। उसी क्षण उनके पीछे छिपे एक शत्रु सैनिक ने धोखे से उन पर वार कर उनका शीश धड़ से अलग कर दिया। तत्पश्चात् भी इस शूरवीर योद्धा का शीशविहीन धड़ हाथ में संगीन थामे शत्रुओं के लिए साक्षात् काल बनकर डटा हुआ था। उनके दूसरे हाथ में अंग्रेजों के असले से लिए बम थे, जो उन्होंने सामने रखे असले पर ही दे मारे।

भीषण धमाका हुआ तथा अढ़ाई सौ से अधिक अंग्रेज सैनिकों को काल की भेंट चढ़ा, वह मां भारती का लाल स्वयं भी मातृभूमि की गोद में चिरनिद्रा में सो गया। अपनी देशभक्ति, व्यक्तित्व एवं कृतित्व के कारण वीर सेनानी बिड़द सिंह टकनेत, आज भौगोलिक क्षेत्र तथा समाज की सीमाएं लांघकर भारत के लोगों के लिए पुरोधा बन गये हैं। ऐसे सत्पुरुषों का योगदान इतिहास की थाती बनकर जन–जन के लिए प्रेरणादायी हो गया है। यह कॉफी टेबिल बुक देश की स्वतंत्रता के लिए प्राणोत्सर्ग करने वाले एक शहीद की एकल गाथा ही नहीं है, अपितु मानवीय संवेदनाओं से ओत–प्रोत एक खोजपूर्ण एवं संग्रह योग्य ऐतिहासिक दस्तावेज भी है।

चांपावतों का इतिहास

प्रथम संस्करण : 2021
पृष्ठ संख्या : 521, रंगीन चित्र पृष्ठ : 49, श्वेत–श्याम चित्र पृष्ठ : 39

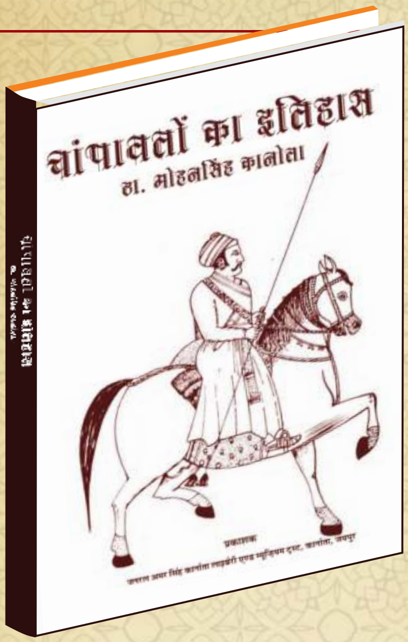

मारवाड़ में मुगल सत्ता के विरुद्ध यहां के शासकों द्वारा एक सशस्त्र अभियान चलाया गया। इतिहास साक्षी है कि इन युद्धों में चांपावत वीरों ने आत्मोत्सर्ग करते हुए अपनी परम देशभक्ति एवं स्वामिभक्ति का परिचय दिया। जब महाराजा अजितसिंह ने वयस्क होने पर दुर्गादास को मारवाड़ के प्रधान का पद देना चाहा तो दुर्गादास ने स्वयं के लिए स्वीकार न कर वह पद ठाकुर मुकुन्ददास चांपावत (पाली) को देने का आग्रह किया। इस प्रकार राठौड़ों द्वारा मारवाड़ की रक्षा तथा स्वतंत्रता के लिए किए गए युद्धों के इतिहास में चांपावत शाखा का इतिहास महत्त्वपूर्ण रहा है। चालीस अध्यायों में रचित यह पुस्तक एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज़ है। प्रत्येक अध्याय में चांपावत शाखा की उपशाखा पर सविस्तार प्रकाश डाला गया है। प्रशाखाओं के प्रवर्तक, उनके ठिकानों तथा ठिकानों के भाई–बेटों के क्रियाकलापों का भी रोचक वर्णन किया गया है। साथ ही शाखा प्रमुख राव चंपकराज से लेकर इस शाखा के घरानों की विभिन्न उपशाखाओं, प्रशाखाओं की ब्यौरेवार वंशावलियां, स्वयं उनके भाइयों की जागीरें तथा उनके पुत्र–पुत्रियों के विवाह आदि संबंधों पर भी समग्रता से विचार किया गया है।

यह पुस्तक चांपावतों की शाखाओं, उपशाखाओं, उनके संबंधियों के बारे में सविस्तार, सुव्यवस्थित एवं प्रामाणिक व विश्वसनीय जानकारी उपलब्ध करवाती है। इसमें शूरवीर चांपावत राठौड़ों की कर्मठता, स्वामिभक्ति, मारवाड़ के प्रति प्रेम के साथ–साथ अपने वचन की रक्षा करने और आन–बान–शान के लिए मर मिटने के अनेकानेक प्रसंग मिलते हैं। इन वीर गाथाओं तथा चांपावतों के गौरवमयी इतिहास को एक पुस्तक में प्रस्तुत करना एक असाध्य कार्य है, जिसे लेखक ने अत्यंत ही सुंदर, सरल व चित्रात्मक तरीके से प्रस्तुत करने का भगीरथ प्रयास किया है। इसमें पूर्वकालीन शासकों द्वारा जनहित में किए गए कार्यों आदि का भी उल्लेख प्राप्त होता है।

ठाकुर मोहनसिंह जी कानोता द्वारा लिखित यह वृहद ग्रन्थ केवल राजपूत समाज के लिए ही नहीं अपितु इतिहास प्रेमियों के लिए भी धरोहर स्वरूप है। यह पुस्तक युवा पीढ़ी के लिए भी मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्रोत है कि किस तरह से राजपूतों के छोटे बालकों, युवाओं तथा महिलाओं ने अपनी मातृभूमि की सेवा में अपने प्राणों की आहुति देकर इस धरा को पूजनीय बना दिया।

श्रीमद्गोविन्दगीता

आईएसबीएन : 978–81–929767–1–7
प्रथम संस्करण : 2021
पृष्ठ संख्या : पन्द्रह + 405 रंगीन चित्र पृष्ठ : पचपन

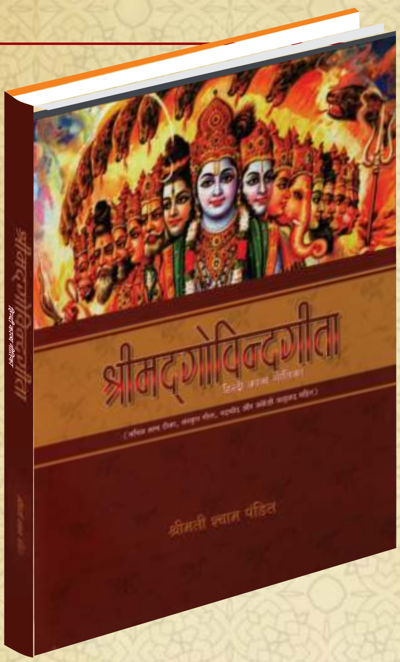

युद्ध क्षेत्र कुरुक्षेत्र में भगवान श्रीकृष्ण के श्रीमुख से निःसृत अर्जुन को दिए गए उपदेश, महाभारत के सबसे सुंदर और महत्त्वपूर्ण प्रवचन सभी के लिए प्रेरणास्रोत हैं। कर्मयोगी कृष्ण का निष्काम कर्म योग मनुष्य को निर्वाण का सहज सुगम मार्ग दिखाता है। शिक्षित समाज में गीता ज्ञान का गूढ़ार्थ एवं दर्शन समझने की क्षमता अधिक होने के कारण उसमें गीता पठन–पाठन का अधिक प्रचार है।

संस्कृत भाषा से अनभिज्ञ, हमारे बहुत से लोग गीता पाठ से वंचित रह जाते हैं।

इस असुविधा को लक्षित करके हमने निश्चय किया कि तुलसीकृत रामचरितमानस के अनुरूप हिन्दी गीता भी होनी चाहिए। यही असुविधा रामचरितमानस शैली में लिखी गयी इस गीतिका के लिए प्रेरणा देने का स्रोत बन गयी। इसमें भाषा–शैली और छन्दादि भी गोस्वामी तुलसीदास की रामचरितमानस के अनुरूप ही है, जिससे सर्वसाधारण के लिये इसका पाठ सुगम हो सके। यह सचित्र हिन्दी सरल भाषा टीका संग्रह अपने इस प्रयत्न में कितना सफल होगा, यह तो गीताप्रेमी ही बता सकेंगे।

Author

Dr D. K. Taknet is a distinguished business historian and writer. He was awarded doctorate on his first published research book. Later he has undertaken many analytical research studies of national importance and been awarded scholarships and fellowships by premier institutions such as the University Grants Commission, Indian Council of Social Sciences Research, New Delhi, and others. He is the author of numerous books. Selected, awarded and best-seller publications are: *Industrial Entrepreneurship of Shekhawati Marwaris, Marwari Samaj, Marwari Samaj aur Brajmohan Birla, BM Birla : A Great Visionary, The Heritage of Indian Tea, Jaipur : Gem of India, Oil : Lighting up Our Lives, The Marwari Heritage, An Illustrated History of Indian Business, Pune : A City of Many Shades and Colours, Rajasthan : A Land of Beauty and Bravery, Kalraj Mishra : Nimitta Matra Hoon Main, Ashiyanon ka Safarnama, Marwari Virasat* and *Veer Birad Singh : Azaad Hind Fauz Ke Pahle Rajasthani Senani.* Forewords of few of these publications were written by the than vice-presidents, prime ministers. The research content and lucid style have been appreciated by leading dignitaries, cabinet ministers, educationists, economists, sociologist, corporates, policy-makers and journalists. These publications have been widely reviewed, excerpted and serialised in daily newspapers which have been appreciated by the readers.

Enriched with over thirty years of research and teaching, his documentation of Indian industrialists and business houses has resulted from over a thousand interviews with eminent corporate executives and organisations. In addition, he writes extensively for the national and international print media. An avid traveller, he has participated in a wide range of international seminars, conferences, and teaching in the some of the global universities. He is also associated with several prestigious professional and social organisations as life member. Recipient of the President's Award, he is currently working on several research projects of national importance. He can be contacted at dktaknet01@gmail.com/ iime.jaipur@gmail.com.

About IIME

The International Institute of Management & Entrepreneurship (IIME), established in 1990 in Jaipur (India), is an autonomous, non-profit and multidisciplinary organisation. Active for 35 years, it was set up in accordance with the recommendations of the Radhakrishnan National Commission on Education, which emphasised the need to tap Rajasthan's rich entrepreneurial resources for the benefit of society through quality education, research and public welfare activities. IIME has been notified in the *Gazette of Rajasthan* and the *Gazette of India*. It is a Scientific and Industrial Research Organisation of the Ministry of Science and Technology, Government of India. Former Chief Justice of India and Chairman of the National Committee for Promotion of Social and Economic Welfare recommended to the Ministry of Finance, Government of India for the inclusion of this Institute in the *Gazette of India* in public interest. The Income Tax Department has also granted it a 80G certificate.

IIME is a premier research organisation which has conducted a number of research studies and publications in thrust areas of national importance. The emphasis is on problem-solving, action-oriented, collaborative applied research and multidisciplinary approach. Some of IIME's research publications are: *Pune: A City of Many Shades and Colours, An Illustrated History of Indian Business, The Colours of Rajasthan, The Marwari Heritage, Jaipur: Gem of India, The Heritage of Indian Tea, Diamond: Divine Gift of Nature, Oil: Lighting Up Our Lives, BM Birla: A Great Visionary, Industrial Entrepreneurship of Shekhawati Marwaris, Marwari Samaj, Marwari Samaj and Braj Mohan Birla, Shrimadgovindgeeta, RHB : Aashiano Ka Safarnama, Birad Singh : Azad Hind Fauz Me Pahle Rajasthani, IndianOil : The Energy of India, Kalraj Mishra: Nimit Matra Hu Main, Marwari Virasat, Rajasthan: The Land of Beauty and Bravery and Champawaton ka Itihas.* These have received widespread appreciation from academics in diverse disciplines and have been equally appreciated by reputed economists, planners, educationists, industrialists and journalists of India. Myriad elucidatory book reviews have appeared in various national dailies and magazines. Former Prime Ministers of India P.V. Narasimha Rao and Atal Bihari Vajpayee, have written forewords for some of these publications.

OUR SERVICES

Since 1990, IIME has earned the reputation of creating quality research, content and visuals. Our expertise lies-in conceptualisation, development and production of customised coffee table books that match global criteria. Our passion is to deliver a fine-fusion of content, design, and technology. Our art books are available in both print and digital bilingual (Hindi and English) formats. We have a team of highly skilled and meticulous editors, researchers, designers, artists, illustrators, photographers, and printers who can deliver printed coffee table art books, and brochures on a wide variety of subjects.

High-End Luxury Coffee Table Books for Individuals amd Corporates

IIME specialises in writing and designing masterfully crafted high quality custom-made, limited edition coffee table books to present your brand, work and passion. It has the privilege to document many rare, stunning coffee table art books for governmental and non-governmental organisations to showcase their portfolios. IIME consistently creates masterpieces.

Your Own Stories or Biographies

It is important to protect and conserve history. Material wealth is transient but the wisdom of ages is incalculable wealth that needs to be cherished. Biographies can be gifted and this legacy can be passed down to the present generation. Success stories of icons or inspiring family members need custom-made and well-crafted art books. The Institute can collaborate closely with you to transform your visions, thoughts and ideas into colourful art books which can be a priceless gift to younger generations and stakeholders to discover and cherish.

IIME
Gate No. 1, Birla Mandir
Jawaharlal Nehru Marg, Jaipur-302004
Mob : +91-9799398505, Tel : +91-141-2620111
Email : iime.jaipur@gmail.com
Website : *iimejaipur.org*